ओ दिन ओ पल

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'



हमर उद्देश्य जँ स्पष्ट अछि तऽ हमर यात्रा अपन लक्ष्य धरि अवश्य पहुँचत। हमर ट्रेन द्रुतगति सँ छोट-मोट हाल्ट आदि छोड़ैत मुख्य-मुख्य जंक्शन पर अटकैत अपन उद्देश्य मे सफल होइत आगाँ बढ़ि रहल अछि। मात्र यात्री के ँ धैर्य सँ समयक प्रतीक्षा करबाक छैक। आइ एतबे, जँ समय भेटल फेर दोसर खेप।

ओ दिन ओ पल

ओ दिन ओ पल

(संस्मरण संग्रह)

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'

जखन-तखन

लक्ष्मीसागर, दरभंगा

ओ दिन ओ पल
प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'
एल.2/33, पी.आइ.टी. कालोनी
कंकड़बाग, पटना- 800020
दूरभाष- 0612-2351976

प्रकाशक : जखन-तखन, लक्ष्मीसागर, दरभंगा
आवरण : शिरीष
संस्करण : भ्रातृ द्वितीया, 2005
मूल्य : 50 टका (साधारण)
100 टका (असाधारण)
मुद्रक : प्रिंटवेल
टावर, दरभंगा

O DIN O PAL
by Premlata Mishra 'Prem'

ई पोथी

पूज्य बाबूजी

पं. दीनानाथ झा (वैद्यजी),

आयुर्वेदाचार्यक पावन-स्मृतिमे समर्पित

—प्रेमलता

दू आखर

'संस्मरण' व्यक्ति आ समाजक मानसिक चेतना आ भावानुभूतिक निर्बन्ध अभिव्यक्तिक एक सशक्त माध्यम अछि । ई गद्यक एक प्रमुख विधा थिक । गद्ये एकटा एहन माध्यम अछि जाहि मे मनुष्य सर्वदा अपनाकेँ व्यक्त करैत अछि । साहित्यमे कल्पना एवं चिन्तनक मात्रागत भिन्नताक कारणेँ विभिन्न गद्य विधाक जन्म होइत अछि । कहबाक अभिप्राय ई जे कखनो-कखनो कोनो विधा मे मननशीलता तथा कल्पनाक उड़ान बेसी रहैत छैक, तँ कोनो विधा मे अपेक्षाकृत कम । मुदा सर्जनात्मकता दुनूमे रहैत छैक ।

संस्मरण थिक सम्यक स्मरण । सम्यकक अर्थ भेल पूर्ण रूपेण सहज आत्मीयता तथा गंभीरता सँ कोनो व्यक्ति, घटना, दृश्य, वस्तु आदिक स्मरण करब । जखन कोनो रचनाकार अतीतक स्मृतिमे सँ किछु आकर्षक स्मृतिकेँ चुनि, अपन रमणीय कल्पनासँ रंग-टीप लगाय व्यंजनामूलक संकेत-शैलीमे व्यक्त करैत अछि तँ एहन गद्य-रूपकेँ संस्मरण कहल जाइत अछि । संस्मरण आत्मकथाक समीपवर्त्ती विधा थिक ।

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' प्रसिद्ध रंगकर्मी छथि । कथाकार सेहो छथि । अध्यापन, घर-गृहस्थीकेँ सुचारु रूपसँ सम्हारैत सामाजिक

कार्यमे सेहो अगुआ छथि । तेँ समाजक विभिन्न क्षेत्रक बहुतो लब्धप्रतिष्ठ व्यक्तिसँ हिनका भेंटघाँट होइत रहलनि अछि । एहि भेंटघाँटक क्रममे भेल गप्प-सप्प, विचारक आदान-प्रदानकेँ ओ अत्यन्त गंभीरतासँ स्मृतिमे जोगौने रहलीह । आ, आइ अपन स्मृतिमे जोगाओल ओहि क्षणकेँ लिपिवद्ध कए, हमरालोकनिक समक्ष पुस्तक रूपमे प्रस्तुत कए गद्य साहित्यक महत्वपूर्ण विधा 'संस्मरण'केँ पुष्ट कयलनि अछि । स्मरणीय व्यक्ति द्वारा कयल गेल कार्य, समाजक प्रति सोच, कार्यक प्रति प्रतिबद्धता, त्याग, सेवा भावना ओ कर्म-निष्ठाक विवेचन, संगहि व्यक्तिक वाह्य ओ आन्तरिक व्यक्तित्वक मूल्यांकन-- जाहि निष्ठासँ कयलनि अछि, स्तुत्य अछि ।

पटना —छत्रानन्द सिंह झा

18.10.05

क्रम

हमर कक्का : यात्रीजी

हतासा भरल जिनगीक अकास मे आशाक एकटा बिजुरी छिटकल। आ' ओहि इजोत मे जाहि महान व्यक्तित्वक दर्शन भेल ओ छलाह हमर कक्का अर्थात यात्रीजी। ओहिना मोन अछि, जुलाई 1964इ०क ओ दिन। भरिसक 16 तारीख छलै। हमर पति एकटा कोनो सरकारी सेवाक साक्षात्कारक हेतु, पटना आएल रहथि। हुनक इच्छा छलनि जे कक्का (यात्री) एहि मे पैरवी कऽ देथि। मुदा कक्का पैरवी कें निषिद्ध बुझैत छलाह। तें पैरवी तँ नहि कएलथिन मुदा दोसर काज पकड़ा पटना मे राखि लेलथिन। पुनः हमरा सम्बन्ध मे जखन ई बुझलनि जे हम मैट्रिक कऽ गेल छी आ' सम्प्रति सासुर मे रहि रहल छी, तँ हमरो पटना बजा लेबाक आग्रह कएलथिन आ' हम हुनकहि आदेश सँ पटना आबि गेलहुँ। आ' जाबत धरि हम व्यवस्थित जिनगी मे नहि आबि गेलहुँ, तावत धरि हुनक निश्छल स्नेह आ' हुनकहि अभिभावकत्व मे हुनक बासा, हमर शरणस्थली रहल। एही ठाम सँ प्रारम्भ भऽ जाइत अछि एहि पाटलिपुत्र नगरी मे हमर संघर्षक यात्रा, जे एखन धरि चलि रहल अछि।

मोन पड़ैत अछि अपन मामा गाम, जतऽ पहिला वर्ग मे हमर नाम लिखाओल गेल रहए। फेर चौथा वर्ग मे अभिराम पंडित, रहिका मे नाम लिखा देने रहथि। आ' मैट्रिक पास भऽ जखन पटना अएलहुँ तऽ कोना आङुर धऽ कक्का, मधुकर गंगाधर सँ परिचय करयबाक लेल आकाशवाणी लऽ गेल रहथि– सभटा चित्र आँखिक परदा पर ओहिना नाचि रहलए। मोन पड़ैए कक्का आ' मधुकर गंगाधरक समक्ष हम कोना बैसल रही। आगू मे कॉफीक प्याला रहय। एक्के सीप तँ लेने होएब आकि जीहक टुनगी पाकि गेल रहय,

किछु नोर आँखि मे छलछला आएल रहय, जकरा बहुत सावधानी सँ हम नुका लेने रही। एखनहु जीहक ओ पाकब मोन पड़ैए तँ छनछना उठैत अछि। कक्का हमर परिचय देने रहथिन– 'हमर भतीजी थिक !' पिताक मृत्यु 1961ई० मे भऽ गेल रहनि आ' तहिया सँ ओ स्थान रिक्त छल, जकर पूर्ति कक्का कऽ देलनि। ओ हमर पिता छलाह, मित्र छलाह आकि मार्गदर्शक छलाह– हम निर्णय नहि लऽ सकैत छी। खाली मोन मे टाङल अछि, एकटा सहृदय अभिभावकक चित्र, निश्छल व्यक्तित्ववला एकटा योगीक चित्र, जे कोनो बाट पर थकमकाएल देखि टोकि देत– धुत, बताहि, एना किएक ठाढ़ि छह ?

काकीक निर्देशन मे हमरा लोकनि (उर्मिला, हुनक जेठ बेटी) भोजन बनाबी जेना-तेना। कक्का एकदिन कहलनि आइ तोँ सभ भानस नहि कर। जो टहलऽ-बुलऽ गाँधी घाट। हम पुछलिअनि भानस के करत? तऽ उत्तर भेटल शोभा मिसर करताह (हुनक जेठ पुत्र)। हम मुँह ताकऽ लगलहुँ तऽ कहलनि सप्ताह मे एक दिन तोरा सभकेँ छुट्टी भेटबाक चाही। अधिकारक बोध करओलनि कक्का। कहियो कहथि, जो तोँ सभ सिनेमा देखि आ गऽ।

मोन अछि ओ कृष्णाष्टमीक ब्रत, फलहारक हेतु पिन्टू सँ रसगुल्ला अनने छला कक्का आ फलाहारक बाद छोट नेना जेकाँ हाथ पसारि प्रसाद मँगने छला।

साँझक जलखै होइक बेसीकाल भूजा मुरही आ बूटक। तकरा संग नोन, हरियर मिरचाइ। काकी कखनहु नहि बाँटथि। हमरा लोकनि सभहक हिस्सा लगाबी। अपन हिस्साक प्रतीक्षा मे बैसल रहथि कक्का। चाह बना पुछिअनि– केहन छैक।

–घरक चाह एहने दुधाइन-चिनिआइन होइत छैक। जवाब भेटय आ हम लाजेँ भागि जाइ।

महेन्द्रू मुहल्लाक ओहि पुरना पोस्टऑफिसक पछिला मकान मे जतऽ हमरा लोकनि रहैत छलहुँ बिजली नहि छल, तेँ लालटेन जरैत छल। एकदिन साँझ खन संयोगे कही, घर मे केओ नहि छल। हम आ कक्का रहि गेल रही। साँझक बेर भेल, जल्दी सँ लालटेन साफ करऽ बैसलहुँ। शीशा हाथ सँ खसल आ चारि टुकड़ी भऽ गेल। कक्का अपन कोठरी मे बैसल कोनो पोथी उनटा-पुनटा रहल छलाह, सोझा जा ठाढ़ भऽ गेलहुँ। कक्काक नजरि पड़लनि तऽ पुछलनि– की भेलौ ? हम कहलिअनि लालटेनक शीशा टुटि गेल। बिनु किछु कहने उठि बिदा भऽ गेलाह आ शीशा आनि हाथ मे धरा देलनि। तखने हुनके सोझा लालटेन मे लगबैत-लगबैत ओहो चकनाचूर भऽ गेल।

कक्का हँसऽ लागल छलाह। हमर मुँह तऽ देखऽ जोगर छल। मुदा कक्का हमरा एक चाट लगा बिदा भऽ गेल छलाह तेसर शीशाक ओरिआओन मे।

एक दिन भोरे-भोर कक्का दू-तीनटा कागत पर अप्पन टेढ़-सोझ पाँती मे लिखल

किछु कविता देखबैत डाँटऽ लगला– सुतै छें घोड़ा बेचि कऽ आ हमरा सिरमा मे दिआसलाइ रखनाइ बिसरि गेलें । अन्हार मे कतेक हथोड़िया मारलहुँ । जखन दियासलाइ नहि भेटल तऽ अन्हारे मे किछु टेबुल पर सँ कागत लऽ लिखऽ लगलहुँ। एना लिखल अछि जे अप्पन लिखल अपनो नहि पढ़ाइत अछि।

एक दुपहरिया राति कऽ कक्का केबाड़ी खटखटाबऽ लगला । संयोगे बुझू जे दुनू गोटा कें निन्न टुटि गेल । धड़फड़ा कऽ केबाड़ फोललौं, जे की बात भेल !

कक्का कहलनि जे एखन निन्द्रादेवी हमरा आँखि सँ भागल छथि तऽ भेल तोरो सभ कें जगा दी ! बैसि कऽ कनेक काल गप्पे करी । आ ओछाओन पर आबि बैसि गेलाह। कतेक काल धरि गामक गप्प तऽ काकीक गप्प । कक्का अप्पन नेनपनक गप्प सभ करैत रहलाह । आ अन्त मे हमरा लोकनिक निन्न तऽ पड़ा गेल मुदा कक्का औंघाइत अप्पन कोठरी दिस बिदा भऽ गेलाह।

पहिले-पहिल आकाशवाणी सँ पन्द्रह टाकाक चेक भेटल तऽ ओकरा भजाओल गेल आ कक्काक फरमाइश भेलनि जे वंशी साहुक दोकानसँ मलाइपुड़ी मँगाओल जाय। शोभा भाइ पाइ लऽ दोकान दिस बिदा भेलाह।

एक दिन दुपहरिया मे डाकपिउन पचास टा सँ उपर पोस्टकार्ड केबाड़ खटखटा कऽ हाथ मे धरा देलक। हम आँखि फाड़ि कऽ देखऽ लगलहुँ। देखै छी सभटा चिट्ठी कक्केक हाथ लिखल अछि। डाकपिउन हमरा-दिस गुम्हरैत बाजल– 'एक पोस्टकार्ड में भी पता लिखा हुआ नहीं है। पता लिख कर बक्सा में डालिएगा ।' कक्का बिनु पता लिखनहि सभ पोस्टकार्ड लेटरबॉक्स मे खसा आयल रहथि। ओहि समय मे सभसँ नीक स्कूल छल सेन्ट्रल स्कूल । कक्केक आदेश सँ महेन्द्रू मे प्राइवेट स्कूल ज्वाइन कयलहुँ। कहलनि घर मे बैसिकऽ भरि दिन की करबें !

अहिना समय आगू बढ़ल आ कक्का आब पटना सँ बाहर बेसी रहऽ लगला। बेसी काल पता लागय कलकत्ता तऽ दिल्ली आर जहाँ-तहाँ। किछु दिनक हेतु जहरीखाल अवश्य जाथि। समय-समय पर जखन पटना आबथि तऽ हमरा भेंट अवश्य करथिं आ संगहि एकदिन हमरा आवास पर रहबाक समय हमरा सँ लेथि ।

भेंट भेला पर पुछथि, तोरा छुट्टी कहिया छौक ? छुट्टी किएक लेबें, रविक दिन तोरा ओहिठामक रखैत छी। खेबाक अपन मेनू सेहो दैत छलाह– छोटकी माछ, साग, धीरा उसीन लीहऽ आ कनेकटा हरियर मिरचाई ।

जलपान मे बूटक भूजा बड़ मन सँ खाइत छलाह ।

जहिना समय बीतैत गेल कक्काक व्यस्तता आ भागा-भागी बढ़िते गेलनि आ शरीर कमजोर होइत गेलनि। आब भेंट भेना बेसी-बेसी दिन भऽ जाइत छल।

मुदा जखन कखनो भेंट होथि, हमर बच्चा सभक नाम पर्यन्त नहि बिसरथि। सभक नाम सँ जिज्ञासा करैत छलाह। ओकरा लोकनिक कार्यकलापक सम्बन्ध मे पुछैत छलाह।

जखन रंगमंच सँ जुड़लहुँ तऽ सभ संस्थाक नाम, ओकर गति-विधिक ब्योरा सेहो लैत छलाह। 'भंगिमा'क पहिल वार्षिकोत्सवक उद्घाटन हुनके द्वारा कराओल गेल छल। तहिया सँ जहिया कहियो पटना आबथि, 'भंगिमा'क चर्चा करथि आ ओकर पत्रिकाक प्रति लेथि आ पढ़थि।

मोन अछि ओ भरिसक वार्षिकोत्सव छलैक। कक्का कहने छलाह- भंगिमा आब पाँच वर्षक भऽ गेलौ। आब एकरा हांटन-डांटन कयल जयबाक चाही।

चन्दा अभियानक गप्प चलल तऽ कहलनि- चन्दा लोके सभ सँ भेटैत छौक! आ अपन सहयोग कहि पच्चीस टा टाका कुर्त्ता के जेबी सँ बहार कऽ हमरा आगां राखि देलनि। हम मुँह तकैत रहलहुँ। जहिया कहियो एहिठाम रहैत छलाह स्वयं इच्छा व्यक्त करैत छलाह नाटक देखबाक।

एक बेर भंगिमाक गप्प चलल तऽ पुछलनि बटुक भाइक हाल-चाल कहऽ! हुनक आवास कतऽ छनि ?

हम वीकर सेक्सन-119, कंकड़बाग कहलिअनि।

ओ कनेक चुप रहलाह। फेर हँसैत बजलाह- एकर माने हुनक पाँजि भेल 'दुर्बल झा पाँजि'।

पहिने जे पाँजि, मूल आदिक निर्धारण कयल जाइत छल से आवासे आदिक आधार पर।

तकरा बाद कएक बेर हुनक हालचाल पुछथि- बच्ची, दुर्बल झा पाँजिक समाचार कहऽ। आइ-काल्हि की सभ कऽ रहल छथि ? हुनकर आखरी भंगिमाक मंचनक अवसर पर उपस्थिति भेल, कालिदास रंगालय मे। ओहि समय खूब अस्वस्थ छलाह। तैयो इच्छा व्यक्त कयलनि नाटक देखबाक लेल। आन बेर अपने रिक्शा पर बैसि चलि अबैत छलाह। मुदा एहि बेर बिनु गाड़ीक ओ जयबा योग्य नहि छलाह तैं भंगिमाक अनन्य सहयोगी श्री नरेन्द्र झा (झा एण्ड एसोसिएट्स) सँ हमरा लोकनि गाड़ी कयलहुँ हुनका लऽ जेबाक हेतु आ जखन हुनक इच्छा होनि घर पहुँचा देबाक लेल। सभ कलाकार सँ काका भेंट कयलनि आ' फोटो सेहो खिचबओलनि।

'चेतना समिति'क तऽ संस्थापके छलाह, तें तकर कथे कोन! मुदा एक बेर गतिविधिक चर्चा करैत कहने छलाह जे 'चेतना समिति' कें आब सात दिनक आयोजन

करबाक चाही आ अन्तिम दिन एकटा नीक अखाड़ा ताकि पदाधिकारी लोकनि अपना मे कुश्ती लड़थि ।

स्वास्थ्य बेसी खराब भऽ गेलाक बाद कतहु एसगर अएनाइ-गेनाइ बन्द भऽ गेलनि। जतऽ कतहु जाथि शोभा भाइक संग । एक बेर सुकान्तक आवास पर छलाह तँ कहलनि मन होइत अछि शोभा मिसर केँ सुतले छोड़ि एसगर कतहु बिदा भऽ जाइ। हिनका संग रहने लगैत अछि जेना हाथ-पैर छिना गेल हो।

काकीक बहुत सम्मान करैत छलथिन। जखन-तखन काकीक चर्च करैत हुनक सुविधा-असुविधाक चिन्ता अवश्य रहैत छलनि। काकीक एकाएक चलि गेला पर कक्का एकटा साधारण मनुक्ख जकाँ कानल छलाह। हुनक श्राद्धक अवसर पर काकीक भावनाक ध्यान सदिखन रहैत छलनि। द्वादशाक प्रात जखन हम विदा भेलहु तऽ उर्मिला, मंजू तथा चारू दियादिनी 'हिनकर' बैग नुका कऽ हँसी-ठट्ठा मे लागल छलीह। कक्का चुपचाप आंगने मे आमक गाछ तर एकटा खाट पर बैसल सभटा तमाशा देखैत छलाह। जखन किछु काल अहिना चलल तऽ पुछि बैसलाह- ई कथीक भागा-भागी भऽ रहल छैक ?

भाइ कहलथिन-मिसरजी जा रहल छथि, बड़ जरूरी काज छनि। कक्का आदेश दैत बजलाह- मत्स्य-माँस सँ पहिने केओ नहि जयताह। फुसियो बजबाक एकटा हद्द होइ छैक। आखरी भेंट भेल दरभंगा मे कक्का सँ शोभा भाइक आवासपर। दुर्बल हाथ सँ हमर हाथ पकड़ि कहलनि बड़ दुब्बरि भऽ गेलेँहें !

हम कहलिअनि- कहियो खोज-पुछारि करैत छी आब ?

कक्काक उत्तर छल- हमरा तऽ आब अपने देहक होश नहि अछि। तऽ हम की खोज करबौक ।

कक्का नहि रहलाह, मुदा एखनहु लगैत अछि जे हुनक ओ स्नेहिल हाथ हमर माथ पर अछि ।

*

काका, काकी आ...

कनियेटा छलहुँ तँ बाबू बैसा कऽ खिस्सा जकाँ कहैत छलाह– हम एतेक ठाम सँ घुमि अयलहुँ मुदा हुनका सँ भेंट नहि भऽ सकल। बुझाइत अछि जे आब भेंट होयबो नहि करत ।

हम पुछियनि जे किनका सँ भेंट नहि भऽ सकल ? ताहि पर बाबू लग मे बैसा सविस्तर सुनाबऽ लागथि– हमरा तँ आब भेंट नहिये भऽ सकल, मुदा तोरा सब कें जँ पटना जयबाक अवसर होउ तँ अवश्य भेंट करिहनु आ हमर नाम मोन पाड़ि दिहनु। हमरा दुनू गोटे मे भैयारी अछि। दुनू गोटे एकतुरिये छी। बड़ विनोदी स्वभावक लोक छथि। कनियेटा रही तँ दुनू गोटे कें एकसंग रहबाक अवसर भेटल अछि। लदौर मे। पँडित श्री नचारी झा हुनक मातामह रहथिन आ हमर पितामह। हम सब ओहिठामक बासी छलहुँ, मुदा हमर पूर्वज रहिका मे आबि कऽ बसि गेलाह, तें हम एहिठामक भगिनमान छी। तकरा बाद हुनका सँ फेर कहियो भेंट नहिये भऽ सकल ।

बाबूक ई सबटा गप्प खिस्सा–पिहानी जकाँ हमर माथ मे आइ आबि रहल अछि। बाबूक आशीर्वाद कही अथवा संयोग, विवाह भेलाक बाद हम पतिक संग पटने आबि गेलहुँ। बाबूक कथनानुसार हम सब एक दिन काकाजी सँ भेंट करय गेलहुँ। हमर परिचय सुनितहि लगलनि जे कतऽ उठाबी, कतऽ बैसाबी। काका कहि उठलाह– अयँ, तों दीनाभाइक बेटी छह ? आबऽ आबऽ बैसऽ। मुदा काकाजी कें जतेक खुशी भेल छलनि से तुरन्ते ई सुनि कऽ समाप्त भऽ गेलनि जे हमर बाबू आब नहि रहलाह। कनेक कालक लेल वातावरण एकदम शांत भऽ गेल। तकरा बाद काकाजी लदौरक संस्मरण कहय

लगलाह। कोना बाबा कहथिन दुनू गोटे कें पैर जाँतऽ लेल आ दुनू गोटे एक-एक टा पैर बाँटि लेथि। जखन हाथ थाकि जानि तऽ बाबा कहथिन जे आब चढ़िकऽ दबाबह। ताहि पर हमर बाबू दुखी भऽ जाथि आ अपना सँ श्रेष्ठक देह पर पैर रखबा सँ साफे मुकरि जाथि। ई सब गप्प कहि-कहि कऽ काकाजी अपन बाल्यावस्था मोन पाड़ैत रहलाह। अपनहुँ हँसलाह, हमरो सबकें हँसी लागय। काकी सेहो आबि गेलि रहथि। ओहो गप्प सुनि कें खूब हँसलीह ।

परिचयक बाद हम सब बेसीकाल हुनका सँ भेंट करऽ लगलियनि। एकबेर हम सब संध्याकाल हुनका सँ भेंट करऽ गेलहुँ। संयोगवश चौपालमे कोनो नाटकक प्रसारण भऽ रहल छलैक। नाटकक नाम तँ मोन नहि अछि, मुदा ओहिमे हमहूँ छलहुँ। नाटक मे एकठाम एकटा संवाद छलैक– 'बाबूजी, हमरा हुनका सँ प्रेम भऽ गेल अछि । ई सुनितहि काकाजी जोर सँ ठहाका लगौलनि। हम सब टुकुर-टुकुर मुँह ताकऽ लगलहुँ। एहेन कोन बात भेलैक जे ओ लोट-पोट भऽ रहल छथि। हमरा सबकें गुम्म भेल देखि ओ अपन हँसीकें बलजोरी रोकैत कहलनि– 'हम एहि संवाद पर हँसैत रही। ई कलाकार जे बजलाह कि 'हमरा हुनका सँ प्रेम भऽ गेल अछि' तँ हमरा एना लागल जेना 'हमरा पैर मे बेमाय फाटि गेल अछि !' आब हमरो सबकें हँसी रोकने नहि रुकय । हुनक व्यंग्यपरक दृष्टि एतेक तेज छनि से जानि हम आश्चर्यित आ मुग्ध भऽ गेलहुँ ।

एकबेर गेलहुँ तँ संयोग एहेन जे बाबी सेहो एतहि रहथि। जखन काका हमर परिचय देलथिन तखन ओ कतेक प्रसन्न भेलीह तकर ठेकान नहि। ओ बूढ़ि रहथि, मुदा हुनक स्मरण-शक्ति विचित्र छलनि। ओ तँ पँजियारे रहथि। हमरा लऽगमे बैसा कऽ कहथि– तोहर गोत्र ई छह आ मूल ई। फल्लमाँ जे छथि हुनको इएह गोत्र-मूल छनि। एहिना कतेको गोटेक परिचय देथि आ सेहो हुनक खानदानी परिचय। वस्तुतः एतेक जानब आ से स्मरणो राखब सहज नहि अछि। गप्प-सप्पमे एकदिन बाबी कहलनि– एह, तोरा सबकें देखैत छिअहु तऽ मोन प्रसन्न भऽ जाइत अछि। केहन बढ़ियाँ संगे-संग कतहु गेलहुँ-एलहुँ। हमरा सबहक जमाना बड़ विचित्रि छल। घरमे रहू, बाहर निकलू तऽ महफाक ओहारमे। हमरा तऽ साबिक जमानासँ इएह नीक लगैत अछि। बाबीक एहि विचारधाराकें सूनि हमरा लागल जे ठीके काकाजी मिथिलाक स्त्री-समाज कें आगाँ बढ़यबाक काज कयलनि। हम सब गप्प करैत रही ताबे दुर्गौली बाली (दमनजीक कनियाँ) हमरा सबहक लेल जलखैक व्यवस्थामे जाय लगलीह। बाबी हुनका मना करैत कहलथिन जे बेटीक लेल तँ लोक बड़ी-भात बना कऽ रखैत अछि। संयोग सँ आइ सैह बनलो अछि। एकरा सैह दियौक, मिसरजीक लेल जे करबाक हो से करियनु ।

बाबीक स्नेह हमरा लेल अविस्मरणीय अछि। मुदा, काकीक स्नेह कें लिखब तँ एकदमे असम्भव। हुनका ओहिठाम जहिया कहियो गेलहुँ अछि, पहुँचिते देरी काका प्रसन्न

भऽ काकीकेँ सोर पाड़थिन– कहाँ गेलहुँ? देखू, के आयल अछि। आ तकरा बाद काकी अपन चिरपरिचित मुस्कान मुँह पर लेने बहुत आस्ते सँ, एक-एक शब्दमे जेना मिसरी घोरल होइक, बाजथि– एँ, प्रेमलता ! कतेक दिन पर ! कहू की समाचार ? धियापुता कोना अछि ? आ एकाएकी सबहक खोज-पुछारी। हुनक ममताक स्मृति मे एखनहु गह्वरित भऽ जाइत छी। हमरा तँ हुनका सँ केवल स्नेह नहि भेटल, प्रेरणा आ मार्गदर्शन सेहो प्राप्त भेल। ओ प्रथम मैथिल महिला मंच पर आयलि छलीह, आ से हमरा लेल सभदिन प्रेरणाक आधार रहल अछि ।

एकबेर काका अचानक अस्वस्थ भऽ गेलाह। अस्पताल पहुँचलहुँ। काका आँखि बन्द कयने पड़ल रहथि। हमरा काकीसँ गप्प करैत सुनलनि कि काका पूछि उठलथिन– प्रेमा आयलि अछि ? काकी किछु कहथिन ताहि सँ पूर्वहि काका पूछऽ लगलाह– तोरा कोना पता लगलहु ? अखबारमे की सभ छपल छलैक ? अखबार अनलह अछि ? हम ओहिठाम जतेक काल रहलहुँ, ओतेक कालमे तीन-चारि गोटे हुनका सँ भेंट करय अयलथिन। सभकेँ ओएह प्रश्न, एक्के जिज्ञासा। सत्ते काका आब टेपरेकार्डर भऽ गेल छलाह । काकीक अभाव तँ हुनका आओरो असंतुलित कऽ देलकनि अछि। ककरो पहुँचि गेला पर अपन दुःख बिसरि खुशी सँ गप्प करऽ लागथि, मुदा किछु कालक बाद फेर ओहिना शांत, खाली...।

काका भावप्रवण लोक छलाह– साहित्य आ जीवन दूनूमे। पटनाक किछु महिलालोकनि महिला समितिक स्थापना कयलनि आ स्थापना-दिवस दिन काकाकेँ अध्यक्षता करक हेतु आमन्त्रित कयल गेलनि। काकी सेहो ओहि अवसर पर आयलि रहथि। एतेक मैथिल महिलाकेँ एकठाम देखि काका आत्मविभोर भऽ उठलाह। आँखि सँ नोर बहय लगलनि। स्पष्ट कहलथिन– 'आइ हमर सपना साकार भेल। एही दिनक कल्पना हम कयने रही। मैथिल ललनालोकनि आब जागि गेलीह अछि...। एहि सँ बढ़ि खुशीक बात भइये की सकैत अछि !' हमरा मोन अछि जे महिलालोकनि हुनक एहि भाषण सँ कतेक प्रभावित आ प्रेरित भेलि रहथि। मुदा ओहिठाम एक-दूटा नवयुवक एहनो छलाह जे बजलाह कि हरिमोहन बाबू चाली केँ फूकि कऽ साँप बना रहल छथि ।

हमरा आश्चर्य भेल। 'कन्यादान' छपलाक बाद सेहो संकीर्णताक पुजारीलोकनि एहिना व्यंग्य कयने रहथिन। मुदा तकरा तँ बहुत दिन भऽ गेलैक। आबो यदि एहि प्रकारक टिप्पणी कयल जाइत अछि तऽ से युवक समाजक प्रतिक्रियावादी विचार थिक। एहन युवक सभसँ हरिमोहन बाबू सभ दिन आगू रहलाह अछि, आइयो छथि ।

*

कठघरामे ठाढ़ हम

ओना हम डायरी नहि लिखैत छी, तेँ कोनो घटना वा दुर्घटना जखन मोन पाड़ऽ बैसैत छी तँ ओहि समय तिथि, मास आ वर्ष निश्चित करब असम्भव भऽ जाइत अछि। फेर होइए, नहि लिखैत छी सैह नीक अन्यथा जखन ओकर पन्ना उनटबितहुँ तँ ओहनो पन्ना सोझाँ अबैत जकरा तत्क्षण फाड़ि देबाक इच्छा होइत ! मुदा से अनुचित। जे घटना घटित भऽ गेल तकरा कोनहुना बिसरल नहि जा सकैत अछि।

तहिना से व्यक्ति सोझाँ आबि गेल, तकर गुण-अवगुण वा ओकरा सँ भेटल स्नेह आ आदर केँ बिसरब असम्भव।

ओहने एकटा व्यक्तिक नाम अछि सुधांशु 'शेखर' चौधरी, जनिकर स्नेह, आदर बिसरल नहि जा सकैत अछि। हुनक साहित्यिक चर्चा बहुत बेर भऽ चुकल अछि, होइत रहत विद्वान आ साहित्य मर्मज्ञक लेखनीक माध्यमे। हम मात्र अपन अनुभव किछु पाँतीमे दऽ सकैत छी, संगे श्रद्धासुमन सेहो ओहि कालजयीकेँ ।

अचानक समाचार भेटल, 'शेखर' जी अस्पताल मे छथि। हम समाचार सुनिते अस्पताल पहुँचल छलहुँ, मुदा ओ किछु गप्प करबाक स्थितिमे नहि छलाह। हुनक एकमात्र पुत्र शरदिन्दुसँ हालचाल पूछि सन्तोष कयल। शरदू कहलनि– 'हम जहिना किछु शुभ समाचार सुनयबाक हेतु उताहुल भेल घर पहुँचल रही तँ, बाबूजी अचेतावस्थामे छलाह ।' ई कहि खूब कानऽ लगलाह। हम हुनका तोष-भरोस दऽ, जे दुनियाक रीति छैक, चिन्तित घर पहुँचलहुँ। दुःख एहन वस्तु छैक, जे ककरा पर घटित होइत छैक, वैह ओकरा भोगि सकैत अछि। हँ, कनेक कालक हेतु ककरो सुना मोन हल्लुक कऽ सकैत छी ।

तहिया फोनक सुविधा नहि छल तेँ दू दिनक बाद केयो कलाकार समदिया समाद लऽ अयलाह जे 'शेखर' जी नहि रहलाह। सुनिते अस्पताल गेलहुँ। ओतऽ दर्शन नहि भऽ सकल तँ विद्यापति भवन आ ओतऽ सँ किछु कलाकारक संग हुनक अन्तिम दर्शनक इच्छा मोनमे पोसने श्मशान-घाट धरि पहुँचल रही। ओतऽ विद्युत शवदाह गृहक सोझाँ किछु 'भँगिमा' परिवारक कलाकारक संग हम ठाढ़ रही। नजरि एम्हर-ओम्हर दौड़बैत, हुनक अन्तिम दर्शनक हेतु मन व्याकुल छल कि तखने एकटा एकरंगा कपड़ाक छोट सन पोटरी कोनो अनचिन्हार व्यक्ति शरदूक हाथमे आनि धऽ देलक ।

हम जानकारीक जिज्ञासासँ बटुक भाइ (छत्रानन्दजी) दिस तकलहुँ आ ओ अपन विशेष अन्दाजमे निर्विकार भावेँ उत्तर देलनि–'वैह छथि 'शेखर' जी !'

प्रत्येक व्यक्तिक अन्तिम सत्य वैह छैक।

हम शरदू दिस तकलहुँ आ ओ हमरा दिस देखि ओहि पोटरीकेँ हाथमे धयने नोर बहैबा आ पोछबामे लागल रहलाह। ककरोमे हुनकर नोर पोछबाक साहस नहि छलैक, तेँ हमही लोकनि सभ कलाकारक संग गंगाक दोसर घाट पर हाथ-पयर धो, विद्यापति भवन आबि एकटा शोक-सभाक आयोजन कयल। नाटककार स्व० सुधांशु 'शेखर' चौधरीकेँ मौन श्रद्धांजलि दऽ सभ अपन-अपन खोँता दिस विदा भेल ।

कोनो नाटककारक निधन एकटा कलाकारक हेतु माय-बापक मृत्युसँ कम नहि होइत छैक । आ ई ओहन समयमे भेल जखन 'शेखर'जीक परिवारकेँ सेहो हुनक आवश्यकता छलनि आ ताहूसँ बेसी कलाकारक परिवारकेँ जाहिमे 'भँगिमा' परिवारक नाम उल्लेखनीय अछि। सत्ते जेना माय-बाप कोनो शिशुकेँ जन्म दऽ ओकर भरण-पोषण करैत अछि तथा अपन परिवारमे आ समाजमे ओकरा हेतु उचित परिवेशक रचना करैछ जाहिसँ ओहि शिशुक उचित मानसिक-शारीरिक विकास हो आर ओ दीर्घजीवी भऽ सकय, तहिना एकटा नाटककार सेहो अपन नाटक लिखबाक समय ओकर प्रत्येक पात्रक भूमिकाक सम्बन्धमे सोचैत अछि आ ओकरा हेतु ओहि मात्र दू घंटाक वा किछु समयक नाटकमे किछु तेहने परिवेशक संरचना करैछ जाहिसँ ओकर प्रत्येक पात्र दर्शकक हृदयमे दीर्घजीवी भऽ सकय। तकर निर्वाह 'शेखर'जी अपन नाटकमे पूर्णरूपेण करैत छलाह, से खाहे ओ पन्द्रह बीस मिनटक रेडियो-नाटक हो अथवा दू घंटाक रंगमंचीय नाटक ग।

संयोग कहू वा विसंयोग, हमरा जहाँ धरि स्मरण अछि हुनक रेडियो-नाटक हो वा स्टेज नाटक, हम हुनक नाटकक एकटा पात्र अवश्य रहैत छलहुँ ।

पहिल खेप हुनकासँ कहिया भेंट भेल से स्मरण नहि अछि परन्तु बरोबरि हुनका सँ हमर सम्पर्क बनल रहल । पहिने मात्र एकटा कलाकारक रूपमे आ शनैः शनैः परिवारक सदस्यक रूप मे । हमरा हृदयमे हुनक स्थान पिता सदृश छल ।

हम हुनकर लिखल नाटकमे कतेक जीवन जीबि चुकल छी। कतेक बेर मरलो होयब ।

ओना एक बेरक घटना मोन अछि– रेडियो-नाटक छल हुनक 'जय सोमनाथ' । ओहिमे कन्याक पिता जाइत छथि सभागाछी वर अनबाक हेतु आ जखन ओ वर लऽ दरबज्जा पर पहुँचैत छथि ता धरि आँगन मे कन्ना-रोहट शुरू छल। कारण ओ कन्या अपन पिताक कष्ट सँ दुःखी भऽ माहुर खा लेने छलि। ओहि नाटक मे ओ माहुर खायबाली कन्या हमहीं छलहुँ। नाटकक प्रसारणक पश्चात जखन 'शेखर'जी रेडियो मे भेँट भेलाह तँ हुनक कहब छलनि जे अहाँक मरब हमरा नीक लागल। आ इएह हमर सौभाग्य छल ।

रंगमंचीय नाटकमे चेतना समितिक मंच सँ जे प्रथम मंचित नाटक छल 'भफाइत चाहक जिनगी' ओ अत्यन्त सफल भेल छल। तहियासँ लऽ आइ धरि हुनक अन्तिम नाटक 'लगक दूरी' धरि हुनक नाटकक एकटा पात्र अवश्य रहलहुँ ।

गप्पक क्रममे एक बेर कहने छलाह– जखन हम नाटक लिखब आरम्भ करैत छी तँ अहाँ हमर सोझाँ आबि जाइत छी आ हम ओ सम्वाद प्रेमलताक हेतु लिखैत छी ।

हुनक नाटकक सफलता मात्र कलाकार पर निर्भर नहि छल। ओ हुनक लेखनीक कमाल छल। ओ स्वयं कलाकार रहि चुकल छलाह तेँ प्रत्येक पात्र मे ओ स्वयं जीबैत छलाह। 'शेखर'जीक लिखल नाटक जे बीस वर्ष पहिने लिखल गेल वा मंचित भेल से आइयो ओतबे समसामयिक अछि ।

ओ नाटकक एकटा ओहन कारीगर छलाह जेना कोनो गामक एकटा सोझ-साझ कमार अपन हाथमे छेनी-बसुली लेने आओत आ तेहन खाट वा पलंग ठोकि-ठाकि तैयार कऽ देत जकर कतहु सँ कोनो कोन ढील नहि हो। तहिना 'शेखर' जीक नाटकक कलाकार मात्र हुनक लिखल सम्वाद जँ नीक जकाँ बाजि गेल, तँ बिनु कोनो ताम-झामकेँ हुनक नाटक सफल होयब निश्चित अछि ।

आइसँ लगभग दस वर्ष पूर्व हम हुनके साहित्यपर शोध करबाक विचार कएल आ ताहि सम्बन्ध मे हुनका सँ गप्प सेहो भेल छल। हमर विचार सुनि ओ अतिशय प्रसन्न भेलाह। मुदा हमर विचार एखनो विचार बनल अछि। तकरा बाद हुनक आवास पर गेलहुँ तैयो आ कतहु कोनो आन ठाम भेटला तखनो, एहि बातक जिज्ञासा कयलनि। लगैए हम एखनो एकटा कठघरा मे ठाढ़ होइ आ शेखर जी हमरा सँ पूछि रहल होथि– 'प्रेमलता, अहाँ शोध प्रारंभ कयल ?'



स्मृति-तर्पणक दू शब्द

श्रद्धेय पं० जयनाथ मिश्रक व्यक्तित्व केँ आइ जखन हम मन पाड़ए बैसल छी तऽ लगैत अछि जेना ओ एकटा हमरा लोकनिक भाषा आ संस्कृतिक पहरूआ छलाह। हुनक व्यक्तित्व एकटा कोनो गामक चौबटिया पर ठाढ़ ओहन विशाल बटवृक्षक समान छल जाहि पर असंख्य चिड़ै-चुनमुनी अपन खोंता लगौने आनन्दपूर्वक निवास कऽ रहल अछि। कतेको बटोही बाट चलैत-चलैत थाकि गेला पर ओहि गाछक छाहरि मे बैसि किछु क्षणक हेतु सुस्ता लैत अछि आ पुनः अपन गन्तव्य स्थान धरि जयबाक हेतु विदा होइत अछि। कतेको समस्या सँ ग्रसित अपन समाजक एक साधारणो जन हुनका समीप जा अपन समस्याक समाधान कऽ पबैत छल। कतेक बेरोजगार अपन बेरोजगारीसँ मुक्ति पबैत छल। कतेक मेधावी छात्र अपन पठन-पाठन केँ आगाँ बढ़यबाक हेतु हुनक समीप पहुँचल आ ओकरा ओहि मे सहयोग भेटलैक। कोनो पिता अपन बेटीक विवाहक समस्या लऽ हुनका समक्ष ठाढ़ भेल तऽ ओकरो कतहु कोनो सूत्र धरा ओहि संकट सँ मुक्ति दिऔलनि। हुनक आवास एकटा एहन दलान छल जाहि ठाम सदिकाल अपन मिथिला-मैथिलीक चर्चा, अपन भाषा आ संस्कृतिक सम्बन्ध मे चिन्तन-मनन कयल जाइत छल ।

ओ समय, आजुक समय जकाँ 'मिडियाक युग' नहि छल। एतेक अखबार, पत्र-पत्रिका नहि छल आ ने छल एतेक प्रेस। कम्प्यूटरक तऽ कथे नहि हो। आँगुर पर गनल अखबार आ प्रेस छल। ताहू मे एहि मगधनगरी मे अपन मातृभाषा मैथिली मे किछु पत्र-पत्रिका, पोथी आदिक प्रकाशन आ बिक्री करब आर कठिन छल ।

हमरा लोकनिक बीच एहन अनेक कवि-साहित्यकार रहलाह अछि, जनिका हुनक

अजन्ता प्रकाशनक सहयोग सँ अपन भाषा मे किछु कहबाक अवसर भेटलनि आ अपन समाजक बीच अपन साहित्यक माध्यमे ठाढ़ भेलाह। जीवनक बाट पर आगाँ बढ़बाक हेतु एकटा सहज सोपान छलाह ओ । ई कोनो एकगोटेक मुँहसँ सुनल गप्प नहि अछि।

हम 1964 इ०क जुलाइ मासक मध्य मे अपन गाम सँ मैट्रिक पास कऽ पटना आयल छलहुँ तऽ सर्वप्रथम महेन्द्रू मुहल्ला मे अवस्थित यात्री काकाक आवास पर ठहरल छलहुँ। यात्रीकाकाक सान्निध्य मे साहित्यकार, पत्रकारक जुटान आ संगहि एहन चर्च सभ होइते रहैत छल । ओहि चर्चाक क्रम मे अजन्ता प्रकाशन, चेतना समिति आ पं० जयनाथ मिश्र अबस्से रहैत छलाह। पं० जयनाथ मिश्र एक व्यक्ति नहि अपितु संस्थाक नाम छल ।

तेँ कहलहुँ ने, ओ एकटा एहन विशाल बटवृक्षक समान छलाह जाहिठाम सभ केँ समान रूप सँ छाहरि भेटैत छल। गाछ कोनो वर्गभेद आ जातिभेद आकि धर्मभेद नहि बुझैत अछि। ओहन व्यक्तिक हेतु कियो खास नहि होइत छैक, मुदा ओहि व्यक्तिक व्यक्तित्वक ई विशेषता होइत छैक जे लोक हुनका अपन खास होयबाक दाबी करऽ लगैत अछि। ओ अपन भाषा-संस्कृतिक संगहि संग मानवताक पुजारी छलाह ।

मैथिली महिला संघ जे आइ अपन समाज मे निरन्तर महिला सँ महिला केँ पुनः तकरहि माध्यमे एक परिवार सँ दोसर परिवार केँ जोड़बाक काज कऽ रहल अछि सेहो हुनके 'मानसपुत्री' अछि ।

हम एकटा अकिंचन, हृदय मे अपार श्रद्धा रहितहुँ ओकरा शब्दक रूप मे ठोर पर आनब आ लिपिबद्ध करब हमरा हेतु दुरूह कार्य अछि ।

तेँ हम एतबे कहब जे माँ मैथिली अपन उर्वर माँटि पर एहने पुत्ररत्न केँ जन्म दैत रहथु, जाहि सँ आइ हमर भाषा केँ संविधान मे जे स्थान भेटल अछि, तकर मर्यादाक रक्षा हो, आ ओ सतत समृद्धिशालिनी बनि विश्व मे अपन अन्यतम स्थान बनाबय, जाहि सँ हमरा लोकनिक अगिला पीढ़ी केँ अपन भाषाक प्रति स्नेह आ आदरभाव बनल रहय। जँ हमर समाज, एकटा बेटी केँ अपन पिताक तर्पण करबाक अधिकार दैत अछि, तँ हमर ई दू शब्द हुनका हेतु तर्पणक दू बुन्न जल समान अछि।

एकरे संग हम अपन ओहि पुरखा केँ शत-शत नमन एवं प्रणाम करैत छी।



नारी-जागरणक अग्रदूत

हमरा जीवनक संग एकटा ऐतिहासिक घटना घटित भेल अछि। आ से रंगमंचीय जीवन मे प्रवेश करबाक प्रारम्भे मे। घटना थिक 1961 इ० पन्द्रह अगस्तक। स्वतंत्रता-दिवसक अवसर पर हमरा गामक (रहिकाक) विद्यालय मे आने वर्षक जकाँ एहू वर्ष रंगविरंगी कार्यक्रम जेना-नाटक, खेलधूप, कवितापाठ, कथापाठ, वाद-विवाद आदि प्रतियोगिताक आयोजन कएल गेल छल। ओहि समयक हमर शिक्षकलोकनि बेश उत्साहक संग कार्यक्रमक तैयारी करथि। नेतृत्व रहैत छलनि माननीय प्रधानाध्यापक श्री चन्द्रिका प्रसादक। एकटा नाटक करबाक योजना बनल जाहि मे महिला पात्रक भूमिका छात्रालोकनि करितथि। ओ नाटक छल 'बसात' आ नाटककार छलाह पं. श्री गोविन्द झा। दिन मे भेल कार्यक्रम मे हमरा लोकनि ओहि नाटकक एकटा जागरण-गीत पर नृत्य कएने छलहुँ 'सखी हे जागह-जागह भेल प्रात'। नाटकक आयोजन साँझमे छल। छात्रा सभ तैयार भए स्कूल पहुँचि गेलि छलहुँ। मेकअप भए रहल छल। एम्हर काने-कान गाम मे ई बात पसरि गेल जे शिक्षकलोकनि एहि गामक धी-बेटी सँ नाटक करबा रहल छथि। सहे-सुस्ते दलाने-दलान गलगुल होइत-होइत किछु गोटे हमर पिताक समक्ष ई बुझयबाक हेतु उपस्थित भेलाह जे ससुरबासि बेटी एक तँ प्रतिदिन स्कूल जाइत अछि, सएह अनर्गल, ओहि पर सँ आब नाटक करत । घोर कलिकाल आबि गेल ।

हमर माता-पिता हुनकालोकनिकेँ निरुत्तर कए विदा कए देल। तदुपरान्त ओ सब गोल बना कए शिक्षकलोकनिक हाथ-पैर तोड़बाक नेयारसँ विद्यालयक प्रांगण मे जमा होइत गेलाह। एम्हर हमरालोकनिक ग्रूपक किछु छात्र शिक्षक लोकनिक कानमे ई बात

जुगुता कए दए गेल। कोनो अनट-बिनट नहि भए जाए, तेँ हमरालोकनिकेँ विद्यालयक पछुआर बाटे गाम पर पहुँचबा देल गेल। आ एतहि हमर प्रथम रंगमंचक जीवन प्रारम्भ होएबासँ पूर्वहि समाप्त भए गेल। तेँ जखनहि पं. श्री गोविन्द झाक दर्शन होइछ, अथवा हुनका प्रसंग पढ़ैत-सुनैत छी, ई घटना धक्सन हमर अन्तरक रंगमंच पर नाचय लगैत अछि।

पटना अएला पर ओकर क्षतिपूर्ति नीक जकाँ भए गेल अछि। पं. झाक कतेको नाटकमे भूमिका करबाक सुअवसर प्राप्त भेल, यथा- 'रुक्मिणीहरण', 'अन्तिम प्रणाम' तथा हिनके कथा पर आधारित नाटक 'पातक मनुक्ख', जकर नाट्य रूपान्तर कयने छथि हिनक जेठ बालक डा. अरविन्द अक्कू।

पं. झाक नाटकक माध्यमे हमरा अपन अभिनय कला मे विविधताक अवसर भेटल अछि। ओना होइत ई छल जे बेसी नाटकमे एक्के रंगक भूमिका करय पड़ैत छल। ओहि सँ मन उबिया गेल छल। पं. झाक नाटक ओहि अकुलाहटिकेँ दूर कए हमरा मे स्फूर्ति आनि देलक अछि।

पं. झाक नाटकक पात्र सभ तत्काल मे जे सामाजिक धारा चलि रहल अछि, ओहि धाराक विपरीत परिवर्तन चाहैत अछि। आइसँ चालीस वर्ष पूर्व जे नाटक लिखल गेल ओहूमे ओ भाव छल आ जे नवीनतम कृति (रुक्मिणीहरण) छनि ओहूमे अछि। एहि नाटकक जन-बोनिहार यद्यपि अशिक्षित अछि, परंच लिलहा कोठीवलाक अत्याचारसँ त्राण पएबाक हेतु एक संग भए संघर्ष करैत अछि। ओकरालोकनिक एकतासँ समाजमे परिवर्तन अबैत अछि।

रंगकर्मीकेँ सम्मान आ आदर भेटैत छैक नाटकक सफल प्रस्तुतिसँ। पं. गोविन्द झाक नाटक विशेषत: 'रुक्मिणीहरण' हमरालोकनिकेँ प्रतिष्ठा दिऔलक अछि। मैथिली नाटकक सुदीर्घ परम्पराकेँ आन भाषाक नाटकक समक्ष ठाढ़ कएलक। से अपने प्रान्तमे नहि, आनो प्रान्त मे।

कतेको ठाम नाटककार आ निर्देशकमे, जँ संयोगसँ एकठाम भए जाथि, अनेको विन्दु पर सहमति नहि भए पबैत अछि। नाटककार अपन शब्द-शब्द पर अड़ल रहैत छथि तँ निर्देशक प्रभावोत्पादनक हेतु यत्किंचित् परिवर्तन-परिमार्जन चाहैत छथि। पं. गोविन्द झा एहि विन्दु पर विचार करैत छथि। अपन बात मनेबा लेल अड़ि नहि जाइत छथि। कोनो नाटक लिखबाक क्रममे छोटो वयक कलाकारक समक्ष अपन योजना राखि हुनक विचार धैर्यपूर्वक सुनैत छथि। एहन अवसर पर कतहुसँ ई आभास नहि होइत अछि जे एतेक महान् विद्वानक समक्ष बैसि तर्क-वितर्क कए रहल छी। हुनक एहि उदारता सँ कलाकारकेँ सन्तोष होइत छैक। आत्मबल बढ़ैत छैक।

पं. श्री गोविन्द झा एक ओहन सांस्कृतिक पुरुष छथि जनिक जीवनक समस्त स्नेहबाती अनुज साहित्यकार-कलाकार लेल छनि। जतेक हिनकासँ रंगकर्मीकेँ भेटलैक अछि अथवा भेटि रहल छैक ओतेक आन कोनो व्यक्तिसँ नहि। कखनहुँ पहुँचू, आवास पर अनवरत रूप सँ मिथिला-मैथिलीक प्रति सक्रिय भेटताह। कखनहुँ शब्दकोशक निर्माणमे लागल तँ कखनहुँ उपन्यास लिखैत, कखनहुँ मंचोपयोगी नाटक पर विचार करबामे तल्लीन तँ कखनहुँ भाषाविज्ञान पर चिन्तनलीन, जेना सदिखन कोनो अपूर्ण कार्य केँ कम सँ कम समय मे पूर्ण करबा मे तत्पर होथि। पं. झाक ई सक्रियता हुनक समतुरिये नहि, अल्पोवयक लोक लेल स्पृहाक विषय बनि गेल अछि ।

जखनि कौखन पं. श्री गोविन्द झाक समक्ष जएबाक अवसर अबैत अछि अथवा हुनक नाम स्मरण होइत अछि, होइछ जेना मिथिलाक कोनो प्राचीन मनीषीक सोझामे ठाढ़ छी। हिनक जीवन-शैलीसँ सत्ते हमरा लगैत अछि जेना हम मण्डन मिश्र वा वाचस्पति मिश्रक युग मे पहुँचि गेल छी। महाकवि विद्यापतिक तऽ एकटा रेखाचित्र सेहो हमरा लोकनिकेँ उपलब्ध अछि परंच अनेको ओहन विद्वान लोकनि छथि जे सम्पूर्ण जीवन एक आसन पर बैसि हाथ मे कलम आ आगाँमे मोसिदानी राखि तकरे संग किछु तालपत्र जाहि पर अपन कठिन तपस्याक माध्यमे प्राप्त कएल असीमित ज्ञानक भंडार हमरा लोकनिक लेल एक धरोहरिक रूप मे छोड़ि गेलाह अछि। पं. झा ओही परम्पराक जाग्रत रूप थिकाह। श्री गोविन्द झा केँ देखि ऋषिलोकनिक चित्र साकार भए जाइत अछि ।



रंगयात्रा सँ महायात्रा धरि

सम्पूर्ण धरती ईश्वर द्वारा निर्मित्त एकटा रंगमंच अछि। एकर प्रत्येक प्राणी एकटा रंगकर्मी अछि। दोसर रंगमंच अछि मानव निर्मित्त, जाहि पर हम रंगकर्मी अपन-अपन योग्यता आ क्षमताक अनुसार भूमिकाक निर्वाह करैत छी। तेँ कहि सकैत छी जे एकटा रंगकर्मी दोहरी भूमिकाक निर्वाह करैत अछि ।

हमरा जनैत कोनो व्यक्ति सुविचारित ढंगेँ रंगकर्मी नहि बनैत अछि। संयोग आ परिस्थिति ओकरा रंगकर्मी बना दैत छैक। आजुक समयमे हमरालोकनिक समाजक बहुत रास धिया-पुता रंगकर्मकेँ अपन जीवनक लक्ष्य बना रहल अछि वा रंगमंचमे अपन जीविकाक तलाश कऽ रहल अछि। मुदा आइसँ पचास-साठि वर्ष पूर्व मिथिलाक कोनो ओहन परिवारक बच्चा, जाहि परिवेशसँ पं. त्रिलोचन झा अबैत छलाह, रंगकर्म दिस आकर्षित होयत अथवा रंगकर्मकेँ अपन जीविकोपार्जनक साधन बनाओत, सम्पूर्ण जीवन ओहिमे झोंकि देत, ई हमर कल्पनासँ बाहरक गप्प थीक। कोनो अवसर विशेष पर तहियो गामक युवावर्ग नाटकक आयोजन करैत छल आ आइयो करैत अछि। ताहूमे कतेक अभिभावक विरोध करैत छथिन। आइयो समाजमे रंगकर्मकेँ ओहि सम्मानक भावनासँ नहि देखल जाइत छैक- जे सम्मान कोनो आन प्रशासनिक पदाधिकारी, डाक्टर, इंजीनियर आ कि शिक्षक आदिक लेल लोकक मनमे अकस्मात् उठैत छैक ।

हम आइ मोन पाड़ऽ बैसल छी, परम आदरणीय पं. त्रिलोचन झाकेँ। गौरवर्ण, नम्हरगर आ भरल-पुरल बेस सुगठित शरीर, आँखिमे चमक, वाणीमे मधुरता, हृदयमे सबहक हेतु अजस्र स्नेह, अति व्यावहारिक आ लगभग सत्तरिक अवस्थामे रंगमंच पर

ओहने फुर्ती-चुस्ती, जेहन कोनो नौजवानकेँ भऽ सकैत छैक। सभ कलाकार हुनका 'गुरूजी' कहैत छल। सभ वयसक कलाकार हुनकासँ किछु सिखबाक इच्छा रखैत छल। सत्ते, पटनाक मैथिली रंगमंच पर तहिया 'गुरूजी'क आसन खाली छल। हमरालोकनि हिन्दी रंगमंचसँ निर्देशक 'उधार' लैत छलहुँ। सन् 1984-85मे गुरूजी कलकत्ता महानगरीकेँ त्यागि पटनाकेँ अपन बास-स्थान बनौलनि। हमरालोकनिक समक्ष एक निर्देशकक रूपमे अयलाह 'चेतना समिति' द्वारा मंचित नाटकक माध्यमे। हुनक कार्यशैलीसँ सभ कलाकार प्रभावित छल आ संगहि हुनक शिष्यत्व ग्रहण करबाक हेतु उताहुल सेहो।

एहि स्थिति धरि पहुँचबामे गुरूजीकेँ कैक दशक लागि गेलनि। रंगमंचमे प्रथम प्रवेश भेलनि राजदरभंगाक थियेटरक माध्यमे। किछु दिनक बाद राजदरभंगाक थियेटर समाप्त भेला पर अपन मित्र बैकुंठजीक संग रंगकर्ममे लागि गेलाह आ तकर पश्चात् कलकत्ता प्रवास। कलकत्ता प्रवासक क्रममे कैकटा थियेटर सभमे काज कयलनि। मुदा हुनक मुख्य कार्यक्षेत्र बनल 'मूनलाइट थियेटर'। सभसँ बेसी समय एही थियेटरकेँ देलथिन। 'मूनलाइट थियेटर' जखन बंद भऽ गेल, तकरा बाद ओ कलकत्ताक 'यात्रा पार्टी' ज्वाइन कयलनि।

कलकत्ता मैथिली रंगमंचक गढ़ रहल अछि। कलकत्ता व बंगला रंगमंचक, मैथिली रंगमंचक विकासमे महत्वपूर्ण योगदान रहल अछि। मिथिलासँ लोक जाइत छल अपन रोजगारक तलाशमे कलकत्ता। ओतऽ गेला पर अपन रोजगारक अतिरिक्त बंगला रंगमंचसँ सेहो आकर्षित भऽ जाइत छल। ओकर अनुकरणमे मैथिल समुदाय अपन भाषाक रंगमंचमे ओहि सभ तकनीकक प्रयोग कऽ मैथिली रंगमंचक रंग-सम्पदाकेँ सम्पन्न बनौलनि।

एहने प्रतिभासम्पन्न कलाकारक शीर्ष पर छलाह पं. त्रिलोचन झा। रंगमंच हिनक रोजगारक साधन छल, मात्र मनोरंजनक नहि। तहिया रंगमंचक माध्यमे अपन परिवारक भरण-पोषण, संतानक उचित शिक्षा-दीक्षा आ तकरा लक्ष्य धरि पहुँचायब- ई कोनो मामूली बात नहि छल। जे आइयो धरि सम्भव नहि बुझना जाइत अछि।

समाजक बहुत रास व्यक्ति अपन पेशासँ संतुष्ट नहि रहैत छथि। आनक कार्यक्षेत्र दूरसँ लोककेँ बेसी आनन्दित करैत छैक। तहिना गुरूजी अपन पेशासँ प्रायः संतुष्ट नहि छलाह। तकर प्रत्यक्ष उदाहरण अछि जे परिवारक अन्य सदस्यकेँ रंगमंचसँ वा रंगमंचक चर्चासँ फराक रखलनि।

मूनलाइट थियेटर जखन बंद भऽ गेल आ ओ 'यात्रा' मे शामिल भऽ गेलाह, तखनो मैथिली रंगमंचमे अपन योगदान दैत रहलाह। मैथिली रंगमंचमे मुख्य छल रंगसंस्था 'मिथियात्री' आ सहयोगी छलथिन श्री दयानाथ झा, गुणनाथ झा आ श्रीकान्त मंडल आदि।

गुरूजी आब थाकि गेल छलाह। अवस्थाक असरि तँ शरीर पर होइते छैक। तकर अतिरिक्त हुनक दू टा पुत्र अपन-अपन नोकरी पेशामे लागि गेल छलथिन, आ हिनक गृहस्थीक बोझ ओ लोकनि हल्लुक कऽ देने छलथिन। आब दायित्व मात्र रहि गेल छलनि एकटा कन्यादान आ तेसर पुत्र अम्मूजीक पढ़ाइ ।

यात्रापार्टी मे समय-समय पर यत्र-तत्र रंगमंडलीक संग घूमब आब हुनका पार नहि लगैत छलनि। ओ ओहि मंडलीसँ फराक होयबाक मन बना लेने छलाह। एही उहापोहक स्थितिमे कलापारखी, कला-संस्कृति-प्रेमी एवं स्वयं कलाकार श्री कमलनाथ सिंह ठाकुरजीसँ हिनक वार्ता भेल। ठाकुरजी आग्रह कयलथिन जे आब पटने चलू आ शेष जीवन मिथिला-मैथिली रंगमंचक सेवामे लगाउ। गुरूजीकेँ ई बात रुचलनि आ ओ पटना आबि 'चेतना समिति'क माध्यमे हमरा लोकनिक मार्गदर्शन कयलनि। 'चेतना समिति' वर्ष 1986 इ० मे विद्यापति पर्वक अवसर पर मैथिली रंगमंचक विकासमे हुनका योगदानक हेतु सम्मानित सेहो कयलक ।

गुरूजीसँ जखन कखनहु भेंट भेल, हुनक रुचि, अभिनयक सम्बन्धमे चिन्तन आ अभिनेताक चर्चाक अतिरिक्त कोनो आन बात देखबामे नहि आयल। हमरा हुनक मात्र निर्देशनमे काज करबाक अवसर नहि भेटल, अपितु हुनका संग सहयोगी कलाकारक हैसियतसँ अभिनय करबाक अवसर सेहो भेटल। एक छल मैथिलीक टेलीफिल्म आ दोसर छल भोजपुरी फीचर फिल्म। जेना आन कलाकार सभ सेटसँ हटला पर आन-आन गप्पमे बाझि जाइत अछि, तकर ठीक विपरीत गुरूजी सेटसँ हटलो पर एहू अवस्थामे अपन भूमिकाक प्रति प्रत्येक क्षण चिन्तनशील रहैत छलाह। मात्र भूमिकेक प्रति किएक, अपन भोजन-जलपान, रहन-सहन आदिक प्रति प्रतिक्षण एकटा प्रोफेशनल कलाकार सदृश्य साकांक्ष रहैत छलाह ।

एकटा भोजपुरी फिल्ममे हुनक मृत्युक दृश्यक फिल्मांकन भऽ रहल छल। गुरूजी अर्थी पर पड़ल डोरीसँ बान्हल दरबज्जा पर पड़ल छलाह। कैमरा सभ ठीक-ठाक भऽ रहल छल। ताबतमे खूब तिक्ख रौद भऽ गेल। गुरूजी जल्दी करबाक आग्रह कऽ रहल छलाह। जखन शॉट शुरू भऽ गेल तँ निर्देशककेँ मोन पड़लैक जे एहि दृश्यमे ओतऽ हमरो रहब आवश्यक छैक। हमरा पहिनेसँ तैयार रहबाक सूचना नहि कयल गेल छल। जेना-तेना जल्दीसँ हमरा बजाओल गेल। आ हमरा ओहि दृश्यमे प्रवेश कराओल गेल। हम एक-दू टा आओर महिलाक संग कानब शुरू कयल तँ गुरूजी हमरा पर क्रोधित होइत बाजऽ लगलाह- 'जल्दीसँ भाभट समेटू आ शॉट जल्दी-जल्दी लेबाक हेतु कहियौक। अर्थी पर हमरा कोनो कष्ट नहि अछि, मुदा रौदसँ तबाह छी।' दृश्य समाप्त भेला पर निर्देशककेँ सेहो डटलथिन- 'धूप में सुला दिया और सब अल्ली-टल्ली कर रहा था, सहयोगी कलाकार तक को दृश्य के सम्बन्ध में सूचना नहीं थी !'

दृश्यक उपरांत हमरा लग आबि गुरूजी हमर पीठ ठोकैत दुःख प्रकट कयलनि– हम अनेरे अहाँ पर तमसा गेल रही । आ फेर दुनू गोटा पूरा टीमक संग ओकरा लोकनिक हँसीमे शामिल भऽ गेलहुँ। ओहि दिन गुरूजी खूब ठहाका लगौलनि ।

एम्हर गुरूजी किछु अस्वस्थ रहऽ लागल छलाह। हमर आवास हुनक आवाससँ एतेक दूर छल जे इच्छा रहितो निरंतर भेंट नहि भऽ पबैत छल। गुरूजी सेहो अपन पारिवारिक ओझराहटि आ पत्नीक अस्वस्थताक चिन्ता व्यक्त करैत रहैत छलाह। हमरालोकनि कलाकारक भेंट-घाँट होयबाक जे मुख्य स्थल अछि-विद्यापति भवन- गुरूजी ओतऽ प्रायः कोनो सांस्कृतिक गतिविधिमे एम्हर किछु दिनसँ उपस्थित नहि होइत छलाह। फोन पर यदा-कदा गप्प होइत छल अथवा कोनो कार्यक्रमक हकार देबाक हेतु हमही हुनक आवास पर पहुँचि जाइत छलियनि ।

अक्टूबरमे भरिसक, जेना कि हमरा मोन पड़ैत अछि, फोन कयलियनि तँ पता लागल, गुरूजी असाध्य रोगसँ पीड़ित छथि आ आइ-काल्हि दिल्लीमे हुनक इलाज चलि रहल छनि। दिन बितैत देरी नहि भेल आकि दिसम्बरमे पता लागल जे गुरूजी आब पटना कहियो नहि अओताह। एक महानगरीमे जीवन-यापनक निमित्त वर्षो अपन जीवन बितौलनि, तँ दोसर महानगरीसँ महायात्रा पर बिदा भऽ गेलाह। हम कलाकारगण हुनक अन्तिम दर्शनसँ वंचित रहि गेलहुँ। एहि संसारक रंगमंचसँ भने ओ फुर्सति लऽ लेने होथि, मुदा हम रंगकर्मी जखन कखनो हुनका मोन पाड़ब तँ गुरूजी अवश्य हमरा लोकनिकेँ आशीर्वाद देबाक हेतु अपन हाथ बढ़ा देताह। हुनका जखन मोन पाड़ैत छी तँ हुनक असाधारण व्यक्तित्व सोझाँ आबि एखनहु ओहिना ठाढ़ भऽ जाइत अछि आ हमरालोकनि ओहि व्यक्तित्वक समक्ष नतमस्तक भऽ जाइत छी ।

*

श्रीकान्त मण्डल

एहि वर्ष 7 जनवरी 1994कऽ रंगकर्मी श्रीकान्त मंडलक निधन केँ 'भंगिमा' परिवार अपन व्यक्तिगत क्षति बुझलक ।

समयक चक्र तीव्र गतिएँ चलैत जा रहल अछि। ओ नहि देखैत अछि, ने सोचैत अछि जे ककर जीवन ककरा लेल कतेक महत्वपूर्ण। ताही गति मे ओ समयक चक्र हमर रंगमंचक सिपाही, अग्रदूत, नेता–अभिनेता, निदेशक, चिन्तक श्रीकान्त मंडल केँ सेहो नहि छोड़लक ।

7 जनवरी 1994कऽ एहि रंगमंचीय संसार सँ विदा भऽ स्वर्गलोकक रंगमंच पर अपन नेतृत्व करबाक हेतु ओ विदा भऽ गेलाह। असमय । जखन कि ओ रंगमंच सँ एक डेग आगाँ बढ़ि, एहि विधा केँ स्थायित्व प्रदान करबाक प्रयास मे लागल छलाह। ईश्वर ओहने क्षण मे ओहि रंगमंचक अग्रदूत केँ एहि संसारक रंगमंच सँ दूर, बहुत दूर लऽ जा ओहि दृश्य केँ ओतहि समाप्त करबाक हेतु विवश कऽ देलनि ।

आब की होएत। मंचक पाछाँ हरकम्प मचि गेल। सभ कलाकार एक–दोसराक मुँह ताकऽ लागल। ई भूमिका के करत ? कोनो अभिनेता एखन धरि ओहि भूमिकाक हेतु उपयुक्त नहि बुझा रहल अछि आ ओ सिंहासन खाली अछि । लगैए जेना कल्हुके घटना हो। तिथि आ मास स्मरण नहि अछि। कुणालक संग पछिला वर्ष अपन चिरपरिचित मुस्कीक संग हमरा डेरा मे प्रवेश कयलनि आ हमरा लोकनिक रंगमंचक गतिवधिक संग अपन कार्य आगाँ नहि बढ़बाक चिन्ता व्यक्त कयलनि। आर नहि जानि कतेक तरहक गप्प भेल। कहाँ कनेको आभास भऽ सकल जे आब एना भऽ कऽ हिनका सँ भेंट नहि होएत।

हम चौल करैत कहलिअनि— अहाँ तऽ अपन फिल्म मे एखन धरि फोटो नहि लऽ सकलहुँ अछि, मुदा हमरा कैमरा मे किछु रील खाली अछि, ओकरा हम अहींक फोटो लऽ समाप्त करऽ चाहब ।

ताहि पर जोर सँ ठहाका लगओलनि आ हम चटपट हुनक चारि-पाँचटा फोटो खींचि लेल। इएह अछि हमरा लोकनिक अंतिम भेंट ।

वास्तव मे हमरा हुनका सँ परिचय सेहो किछु एहने सँ प्रारम्भ भेल ।

श्रीकान्त मंडल 'ललका पाग' बनयबाक तैयारी मे लागल छलाह। बटुक भाइ (छत्रानन्द जी) आ विभूति आनन्दक संग हमरा ओहिठाम पहुँचलाह। हुनका संग हुनक फाईनेन्सर सेहो छलथिन। सभटा गप्प निश्चित भऽ गेल, कन्ट्रैक्ट पर हस्ताक्षर सेहो भऽ गेल। गीत रेकर्ड भेल ।

ओहि वर्ष विद्यापति पर्वक अवसर पर ओहि फिल्मक गीत सुनबाक सुअवसर सेहो लोक केँ भेटलैक। सभक मुँह पर प्रसन्नता छलैक। लगैत छल जे आब जल्दीए ई फिल्म बनि कऽ हमरा लोकनिक बीच प्रदर्शित भऽ जायत। मुदा ओ योजना पूर्ण नहि भऽ सकल। हमरा लोकनि निराश नहि भेल छलहुँ मुदा तखने ओहि चिन्तक केँ नियति हमरा लोकनि सँ फराक कऽ देलक। ओ भने हमरा लोकनि सँ दूर भऽ गेल होथि मुदा हम एखनो ओहि बाट दिस अपलक नजरि गड़ौने ताकि रहल छी, एहि आशा आ विश्वासक संग जे ओत्तहु ओ कलाकर्मी, कलाचिन्तक महामानव चैन सँ किन्नहुँ नहि बैसत आ जाहि बाटे ओ गेल ताही बाट पर कोनो देवदूत केँ अवश्य साग्रह अपन अपूर्ण काज केँ पूर्ण करबाक हेतु पर्दाक पाछाँ सँ मंचपर ठेलि पठाओत ।

हम कलाकार ओकर स्वागत मे प्रेक्षागृह केँ एहि आशाक संग मंचसज्जा आ प्रकाश परिकल्पना सँ सजौने ओही बाट दिस ताकि रहल छी...



रंगकर्मी प्रमिला

बाल भंगिमा, प्रमिलाजी आ ठहाका कार्यक्रम लगैत छल जेना तीनू एक दोसराक पर्याय हो ।

ई कोनो एक-दू दिनक बात नहि। अपितु बाल भंगिमाक निर्माण कालहि सँ ई क्रम चलैत रहल। बाल भंगिमाक लीडर रहैत छलाह सोनू आ मोनू, प्रमिलाजीक सुपुत्र आ निर्देशिका रहैत छलीह प्रमिला जी। हुनका लोकनिक संग श्रीनारायण झाजीक पूर्ण समर्थन रहैत छल। जतऽ पति-पत्नीक रुचि रंगमंच मे रहतैक तँ बच्चाक ओम्हर आकर्षित होयब स्वाभाविक छैक ।

एतबे नहि, श्रीनारायण झा जीक संग भंगिमाक उच्चकोटिक कलाकार भवनाथ झा जी (नावार्ड) कलाकारक संग भंगिमाक निर्देशक सेहो रहलाह अछि। हुनक तीन बच्चा सेहो ओहि संग जोड़ा गेल आ बाल भंगिमा दिन प्रतिदिन आगू बढ़ैत गेल। प्रमिला जी सभदिन निर्देशन, अनुवाद, रूपसज्जाक संग-संग प्रस्तुतिक सबटा दायित्व अपना पर लैत छलीह, मुदा अभिनय करब हुनका स्वीकार नहि भेलनि ।

तहिया पटनाक अधिक विद्यालय सभक सत्र सेहो होइत छल जनबरीसँ दिसम्बर धरि। दिसम्बरक प्रारम्भहि मे बच्चा सभ वार्षिक परीक्षा दऽ खाली भऽ जाइत छल। हम सोनू-मोनू कें लऽ प्रमिला जीक सहयोग सँ मुहल्लाक आन बच्चा सभ कें ठेकनाब' लगैत छलहुँ। ततबा बच्चा नाटकक हेतु तैयार भऽ जाइत छल जे कोन बच्चा कें राखल जाय आ कोन बच्चा कें छोड़ल जाय- ई एकटा समस्या भऽ जाइत छल। बच्चाक संग-संग हुनक माता-पिता सेहो ओहि हेतु तैयार रहैत छलाह, जे हमर बच्चाकें एकटा पार्ट लेबाक अवसर अवश्य भेटबाक चाही ।

एम्हर हमरा लोकनि सोच मे पड़ि जाइत छलहुँ जे बाल मन कतहु टूटि नहि जाय। तेँ जाहि बच्चाकेँ देखल जाइत छल बेसी लटपटायल, तकरा अगिला नाटक मे भाग लेबाक प्रलोभन दऽ मात्र रिहर्सल देखबाक छूट भेटैत छल। प्रारंभ मे बाल भंगिमाक कार्यक्षेत्र छल कंकड़बागक रेन्टल फ्लैट। श्रीनारायण झा जी स्वयं एक रंगमंचक समर्पित कलाकार, तेँ हुनके आवास मे रिहर्सल सेहो होइत छल ।

श्रीनारायण झा जी सँ भंगिमा परिवार उपकृत अछि। बैंकक उच्च पद पर रहैत, कतबो व्यस्तता रहला पर ओ नाटक मे अभिनय करबाक हेतु समय निकालि लैत छलाह। तेँ जखन हुनका नाटक मे अभिनय करबाक लेल कहल जाइत छल तँ ओ अपन बेस बड़काटा सुन्दर डायरी बहार करथि आ ओहिमे सँ अपन व्यस्त दिनचर्याक अवलोकन कयलाक उपरान्त नाटक मे छोटो-छिन पार्ट करबा लेल तैयार भऽ जाथि। से बात आजुक कलाकार मे नहि देखल जाइत छैक, आजुक कलाकार जनिक परिचय समाज मे नीक कलाकारक रूप मे भऽ गेल ओ मुख्य भूमिका टा मे अभिनय करब गछैत छथि ।

श्रीनारायण झा जी केँ भंगिमाक कलाकार 'सर' कहैत अछि आ 'सर' कहला पर श्रीनारायण झाजीक बोध होइत अछि ।

प्रमिला जीक आवास आनन्दपुरी स्थित अयाची अपार्टमेन्ट मे आबि गेल छल। श्रीनारायण झा जी अयाची मे एकटा फ्लैट कीनि लेलनि तँ आब भंगिमा आनन्दपुरी स्थित अयाची अपार्टमेन्ट मे फड़य-फुलाय लागल। ओकर मह-मही सम्पूर्ण आनन्दपुरी मे रहनिहार मात्र मैथिल परिवार धरि सीमित नहि रहल। अपितु मैथिल परिवार सँ इतर आनो भाषा-भाषी अभिभावक अपन बच्चाकेँ मैथिली नाटक करबाक हेतु प्रस्तुत कयलनि ।

प्रमिला जीक कार्यक्षेत्र आर बढ़ि गेलनि। कारण इतर भाषा-भाषी बच्चा सभकेँ ठोर पर मैथिली सम्बाद चढ़ायब, तकरा बाद ओकरा सुग्गा जकाँ रटायब आ फेर ओकरा सँ नाटक करायब एकटा बालुक भीत ठाढ़ करब सदृश टेढ़ काज छल। आ एहन कठिन काज प्रमिलाजी खूब नीक जकाँ कयलनि। ओ ओहि मे पूर्ण सफल भेलीह। ओ अन्य भाषा-भाषी बच्चा कोनो बिहारक नहि अपितु कश्मीरी, तमिल, गुजराती आदि छल।

ई प्रमिला जीक परिश्रम, लगनशीलता आ सतत् प्रयासक परिणाम छल जे तमिल भाषा-भाषी आकि कश्मीरी भाषा-भाषी बच्चा जखन भंगिमाक मंच पर दृढ़तापूर्वक अपन संवाद बजैत छल तँ दर्शकक कोन कथा, भंगिमाक आनो कलाकार केँ ई आभास नहि होइत छलैक जे ई आन भाषा-भाषी बच्चा अछि ।

बाद मे श्रीनारायणझा जीक स्थानान्तरण भऽ गेल आ दू-तीन साल सँ प्रमिलाजी कोलकातामे रहऽ लागल छलीह।

प्रमिला जी मात्र रंगमंच धरि सीमित नहि छलीह, अपितु एक कुशल गृहणी

आ सफल शिक्षिका सेहो छलीह। ओ जाहि विद्यालय सभ मे कार्यरत रहलीह, प्राचार्या सँ विद्यालयक सम्पूर्ण कर्मचारी आ शिक्षिकाक प्रियपात्र बनल रहलीह। हुनक घर मे प्रवेश करिते एक कुशल गृहणीक छवि चारूकात सँ परिलक्षित होइत छल। पाककला मे ओतबे निपुण। ककरो स्वागत-सत्कार करब, आगत अतिथिक स्वागत करब, केयो हुनका सँ सीखि सकैत छल। भोजनक विविधता तँ देखिते बनैत छल ।

बेसी दिन नहि भेल अछि, लगैत अछि जेना कल्हुके गप्प हो। भंगिमाक नाट्य दल कोलकाताक मिथिला विकास परिषदक आमंत्रण पर नाट्य प्रतियोगिता मे सम्मिलित होयबाक हेतु २००३क अप्रैलक अन्तिम सप्ताह मे कोलकाता गेल छल। कोलकाता सँ जखन आमंत्रण भेटल तँ एक मास पूर्वे प्रमिलाजीकेँ फोन पर सूचना दैत इहो फरमाइस कऽ देलियनि जे, भंगिमाक नाट्यदल एक साँझ अहींक अतिथि रहत। प्रमिला जीक उत्तर छल- 'एक साँझ किएक? जाधरि कोलकाता मे रहब ताधरि सभ कलाकार हमरे आवास पर भोजन करत।' दुनू पति-पत्नी प्रसन्नतापूर्वक हमरा लोकनिक स्वागतक तैयारी मे जुटि गेलाह। कोलकाताक ओ दिन आब अविस्मरणीय बनि गेल। नाटक समाप्त होइते कलाकार सभ अपन-अपन मेकअप साफ करबामे लागल छल आ प्रमिलाजी दुनू पति-पत्नी सभकेँ अपन आवास पर समय पर आबि जयबाक हेतु निवेदन करैत छलीह। कतेक दिन पर भेंट भेल छल। छूटल दिनक गप्प, कुशल-क्षेम फोन पर एना भऽ कऽ सम्भव नहि छल। श्रीनारायण जीकेँ कोलकाता गेला कोनो बेसी दिन नहि भेल छल, मुदा लगैत छल जेना कतेक दिन पर एक-दोसरा केँ देखि रहल छी ।

ई सभ तँ आब लगैत अछि जेना इतिहासक गप्प भऽ गेल । कहाँ बूझल छल जे आब प्रमिलाजी सँ भेंट एना भऽ कऽ नहि भऽ सकत। बाल भंगिमाक योजनाक साकार रूप देनिहारि, हमर छोट बहिन प्रमिलाजी एतेक शीघ्र हमरा लोकनि सँ फराक भऽ जयतीह से सपनो मे नहि सोचल छल। जनिका ठहाका कार्यक्रम समाप्त होइते अगिला वर्षक चिन्ता दऽ हम सब निश्चिन्त भऽ जाइत छलहुँ ।

प्रमिलाजी जतऽ कतहु रहथु- भंगिमा परिवारक मानसपटल पर सदति एकटा ध्रुवतारा जकाँ चमकैत रहतीह। जाधरि भंगिमा रहत, सम्पूर्ण भंगिमाक कलाकार हुनक ऋणी रहत ।

*

किछु तीत, किछु मिट्ठ

विभूति कहलनि जे 'नाटकसँ सम्बधित अपन किछु तीत-मिट्ठ अनुभव जँ सम्भव भऽ सकय तऽ दऽ देब। हमरा लोकनि मे वयोवृद्ध तऽ अहीँ छी !' पहिने तऽ बड़ हँसी लागल मुदा फेर सोचय लगलहुँ तऽ बुझायल जे ई ठीके कहि रहल छथि। कारण, लोक इएह देखत आब जे हम रंगमंच पर कहिया सँ छी। अर्थात् कतेक वर्ष आ माससँ। भने एते दिन मे हम भट्ठो धरबा योग्य जानकारी हासिल केने होइ अथवा नहि। मनुष्य असली मूल्यांकन अपना सम्बन्ध मे अपने कऽ सकैत अछि। तैँ हम कहब जे हमरा कलाक नाम पर मात्र भट्ठा धरऽ आयल अछि एतबा दिनमे। कखनहुँ काल लगैए जे किओ नीक गुरु भेटैत आ' कहैत जे जतेक किछु अहाँ जनैत छी सभटा बिसरि जाउ आ आउ फेर सँ रंगमंचक सम्बन्ध मे अहाँ केँ किछु नव गप्प सिखबैत छी। मुदा से भाग्य मे कहाँ लिखल अछि। ने हमरा समय अछि ओतेक खोजबिन करबाक, ने ओहि योग्य जे हेताह सएह हमरा समय दऽ सकताह । तैँ लगैए जे दिन-राति एहि रंगमंचक पाछाँ अपस्यांत रहियो कऽ भूखले रहऽ पड़त। ओ हमर जिज्ञासाक भूख भरिसक शांत नहि भऽ सकत ।

जहाँ तक नाटक सँ सम्बन्धित तीत-मिट्ठ अनुभवक गप्प छैक तऽ हमरा लगैत अछि जे ई जीवन कि कोनो नाटक सँ कम छैक, जे जीवन हम जीबि रहल छी ! दिन-राति नाटक करैत रहैत अछि लोक। छी किछु, आ अपना केँ प्रदर्शित करैत छी किछु आओर ।

तखन जे रंगकर्मी अछि यथा हमरे राखि लिअऽ, दोहरी भूमिकाक निर्वाह करऽ पड़ैत अछि। जीवन मे एक सँ एक सुखद अनुभव, तऽ एक सँ एक दुःखद अनुभव सेहो भेटैत रहैत अछि। एक सँ एक रोमांचक घटना सेहो घटैत रहैत छैक। जीवनक किछु अनुभव तऽ एहन होइत छैक जे लोक कें कहल जा सकै आ किछु एहन जे ककरो कहियो नहि सकैत छी। जीवनक किछु एहन सुखद अनुभूति होइत छैक जकरा मन पाड़ि लोक घड़ी, पहर, मास आ वर्ष खुशी-खुशी बिता सकैछ आ किछु एहने होइत छैक जकरा मन पाड़ि घुटि-घुटि कऽ दिन मे लोक एक सै बेर मरैत रहैत अछि। तहिना नाटक मे सैह सब होइत छैक। ओना सत्य जँ पूछी, पढ़बा-लिखबा मे जतबा भोथ रही, अपन कोर्सक किताबक पाठ भले नहि मन रहय, मुदा जीवन मे हमरा संग के कखन केहन व्यवहार केलक, सभटा हमरा ओहिना मन रहैत अछि। भने हम बिसरबाक नाटक कऽ ली, कारण से जँ नहि करब तऽ जीयब कोना ? समाज मे रहबाक लेल बहुत बात कें लोक मटिया दैत अछि तैं जानि-बुझि कऽ बिसरल रहैत छी ।

तहिना नाटको सँ सम्बन्धित घटना जे घटैत छैक से ओहिना मोन रहैत अछि। मुदा सभकें क्रमबद्ध ढंग सँ मोन पाड़ब आ ओकरा लिपिबद्ध करबा मे बहुत समयक काज छैक आ बहुत कागजो-स्याही दूरि होएत। तैं एहि ठाम हम मात्र दू-चारिटा रोचक प्रसंग मन पाड़बाक प्रयास करैत छी।

पहिने तऽ रंगमंच सँ हम एहि प्रकारें ओझरा जाएब से कहियो सपनो मे नहि सोचने छलहुँ । कारण जे ओहि तरहक परिवेश मे ने जन्म भेल, ने ओहि ढंग सँ पालन-पोषण भेल। तखन हँ, स्कूली जीवनमे किछु अपन शिक्षक सभक प्रोत्साहन सँ तथा किछु अपन माता-पिताक उदार विचार रहबाक कारणें....। कारण एक मात्र संतान हमही छलियनि तैं, हमरा सँ बहुत किछु आशा छलैन। हँ विद्यालय मे खेल-कूद, वाद-विवाद, संगीत, कथा प्रतियोगिता आदिमे खूब भाग लैत छलहुँ। एक बेर हमर आदरणीय शिक्षक लोकनि एकटा कोनो छोट एकांकीक मंचन करबा लेल सोचलनि हम भाग लेबाक हेतु सहर्ष तैयार भऽ गेलहुँ कारण हमर माता-पिता कें एहिमे कोनो आपत्ति नहि छलनि। मुदा गामक लोक कें तऽ अपनहुँ घरक लोक सँ बेशी हमरे चिन्ता छलनि तैं ओ एकर पूर्ण विरोध कयलनि। पहिने तऽ हमर माता-पिता कें राजी करऽ चाहलनि, मुदा जखन से सम्भव नहि भेलनि तऽ शिक्षक लोकनि पर अपन आक्रोश व्यक्त करबा लेल सामूहिक रूप सँ तैयार होमऽ लगला। मुदा उचित समय पर शिक्षक लोकनि कें एहिं भावी दुर्घटनाक पता लागि गेलनि आ ओ लोकनि हमरा स्कूलक पछिला बाट सँ जल्दी हमरा घर जा कऽ पहुँचा अयलाह। तैं कोनो अप्रिय घटना नहि घटि सकल आ हम स्टेज पर जयबाक हेतु तैयार नहि गेलहुँ, से कहिये चुकल छी ।

मुदा एकरा संयोग कही या दुर्योग जे, ने लोके जनैत छल आ ने हमहीं जनैत

छलहुँ जे एक दिन इएह नाटक हमर जीवनक एक अंग बनि जाएत आ एही मे दिन-राति लागल रहब। मुदा व्यवसायक रूप मे ने एकरा कहियो हम सोचलहुँ आ ने भविष्य मे हम एहि कला केँ व्यवसायिकताक रूप दऽ सकै छी ।

कहाँ से कहाँ भसिया गेलहुँ। हम सोचै छी, जे ई कोन रोचक प्रसंग भेल ? तैँ आब नाटकमे घटित रोचक प्रसंग पर आबि जाइत छी। 1973सँ चेतना समितिक मंच सँ हम जोड़ा गेलहुँ। ओना रेडियोमे नाटक जखन-तखन करैत रही। एहि रंगमंच पर हमरा आनऽबला छथि ओ व्यक्ति जनिका लोक रेडियोक चौपाल कार्यक्रमक बटुक भाइक नामसँ जनैत छनि। एहि लेल हम हुनका आजीवन धन्यवाद देबनि। एहि लेल सेहो जे हमरा ओ एहि योग्य बुझलनि। अथवा इहो भऽ सकैत अछि जे महिलाक अभाव छल तैँ जे भेटल सैह सही, सेहो भऽ सकैत अछि। आ तखने सँ प्रारम्भ भऽ गेल हमर रंगमंचक यात्रा। तैँ हम हुनक आभारी छी। कहलहुँ ने जेना जीवन मे एक सँ एक रोचक घटना घटैत रहैत छैक तहिना नाटको मे सैह सब होइत छैक। एक बेर एकटा नाटक मे हमरा अपना बच्चा केँ स्कूली बेग जे पीठ पर लटकाबऽ बला होइत छैक, लटका कऽ ओकरा स्कूल बिदा करबाक छल। स्कूल-बैग मंचक पाछाँ राखल छल, जे जखन ओकर आवश्यकता हएत, ओकर व्यवहार कएल जाएत, मुदा जखन ओकर आवश्यकता भेल तखन ओ अपन स्थान पर नहि छल आ हम मंचक पाछू दौड़ऽ लगलहुँ। ओहि जाड़क मास मे पसेना छुटि गेल मुदा ओ बैग नहि भेटल आ अन्तत: हम अपन नाटकक बच्चा केँ बिनु स्कूल-बैग केँ स्कूल पठा देल। बादमे देखै छी तऽ मंच-व्यवस्थापक महोदय अपन पीठ पर ओ स्कूल-बैग नेने घूमि रहल छथि। जखन आवश्यकता समाप्त भऽ गेल तखन ओ बैगक संग उपस्थित भेला। पहिने तऽ खूब तामस भेल। फेर खूब हँसलहुँ हुनक व्यवहार पर ।

एक बेर चेतना समितिक मंच पर छोट-छोट चारि-पांच टा झलकी देखाओल गेल, जेना ओहि समय मे रेडियो मे होइत छल। बहुत कम समयमे ओकर तैयारी भेल छल तैँ बहुत गोटा अतिव्यस्त रहबाक कारणेँ अपन भूमिका पर ध्यान नहि दऽ सकलाह। एकटा झलकीक प्रसंग छलैक मंडन मिश्रक ओहिठाम जे शंकराचार्य पहुँचैत छथि आ हुनका ओहि गामक पनिभरनी मंडन मिश्रक घरक पता दैत छनि, तखनुक। तैयारी जेँ कि हड़बड़ी मे भेल छल तैँ किछु कहल नहि जा सकैत अछि। हम पनिभरनी छलहुँ। तैँ हम तऽ शंकर केँ मंडन मिश्रक घरक बाट देखा देलिअनि। मुदा ओहि घर मे मंडन मिश्रक कतहु पते नहि छल। जनिका मंडन मिश्रक भूमिकाक भार भेटल छल से पैंट-शर्ट पहिरने हाथ पर खैनी मलैत मस्त भेल घूमि रहल छलाह। निर्देशक महोदय मंडन मिश्रकेँ तकबा मे अपस्याँत छलाह। जखन हुनका खैनी मलैत देखलनि तऽ अपन माथ पीटि कऽ रहि गेलाह, हमरा लोकनि पाछाँ खूब हँसलहुँ ।

तहिना एकटा माँ मैथिलीक झलकी सेहो देखाओल गेल छल। माँ मैथिली पूछै

छलीह जे 'हम कतऽ छी आ के छी ?' सहयोगी कलाकार कें हुनक स्थिति बुझयबाक छल जे अपने के छी, किएक एतक महान छी, आदि। माँ मैथिली जे छलीह से तऽ मंच पर आबि गेलीह, अपन भूमिकाक निर्वाह मनोयोग सँ करऽ लगलीह, मुदा हुनक सहयोगी कलाकार जे छलथिन, तनिका अपन एकोटा संवाद स्मरण नहि छल, तें ओ मात्र कान्ह पर गमछा लेने मंचक आगू भाग मे एम्हर सँ एम्हर घूमि रहल छलाह। माँ मैथिली पूछि कऽ हारि गेलथिन जे हम कतऽ छी अथवा के छी, ओ सप्पत खा लेलनि किछु जवाब देबासँ। अन्त मे दर्शक लोकनि कें नहि रहि भेलनि आ वएह सभ हुनक प्रश्नक उत्तर देलथिन जे 'अहाँ विधान सभाक गेट पर छी, चेतना समितिक मंच पर छी, अहाँ भूत छी !' आदि ।

सहयोगी कलाकार कें सेहो दर्शक दिस सँ आबाज आबऽ लगलनि जे 'एना किएक बापक बगान मे टहलान लगबैत छी, किछु बाजू अथवा मंच सँ उतरू आब !' आ हमरा लोकनि हँसैत-हँसैत दोबर भऽ रहल छलहुँ ।

'भंगिमा'क एकटा नाटक मे हमरा तुलसीक आगां मे साँझ देखयबाक छल। दीप मे तेलक स्थान पर किछु तेहन वस्तु रखा गेल छल जे सलाइ धरबिते ओ धधकऽ लागल। कहुना साँझ देखा कऽ जखन ओकरा अपन ओही फूसक घर मे लऽ आनल, तखन आओर ओ तेजी देखाबऽ लागल, पानियो ढ़ारला पर मिझयबाक नाम नहि लैत छल। डरे कंठ सुखा गेल। ओहि घर मे बहुत रास नव कपड़ा सब राखल छलैक। भावी आशंकासँ देह सिहरि गेल, सब संवाद बिसराय लागल। फेर जेना-तेना ओकरा फूलक गमला सभक बीच मे राखि स्टेज पर अयलहुँ आ नाटक समाप्त भेल नीक जकाँ। मुदा दर्शकक तर्क भेलनि जे सीता जी भानस करै छलीह। मोने-मोन खूब हँसी लागल जे केहन भानस भेल से तऽ हमहीं जनैत छी ।

ओही घटनाक पुनरावृति फेर एकटा नाटक मे भऽ गेल। एहू मे साँझ देखयबाक छल। मुदा असोरा पर सँ उतरबाक क्रम मे कनेक नीचा ध्यान देलिऐक कि आँचर मे आगि धऽ लेलक। मुदा हम कनियों नहि घबरयलहुँ आ अपन आँचरक आगि कें हाथ सँ मिझा, अपन अगिला कार्यक सम्पादन मे लागि गेलहुँ ।

किछु दर्शक लोकनि पुछलनि जे इहो नाटक मे देखयबाक छल आकि गलती भऽ गेल। हम चुप्पे रहलहुँ, ताबत ओ अपन अनुमान सुनओलनि जे हमरा लोकनि बुझल जे एहिठाम सँ अशुभ घटनाक आरम्भ भेल अछि। सुनि मन प्रसन्न भेल आ हमहूँ स्वीकारोक्तिमे मूड़ी डोला देलहुँ ।

ओही नाटकक भूमिकाक जिज्ञासाक क्रममे एक महिला बहुत अपनत्व भाव सँ पुछलनि जे– ऐं यै! ओना जे दू-दू टा मनसा अहाँक हाथ पकड़ि बाँहि मचोड़ै छल से केहन मोन भऽ गेल होयत! हमर तऽ करेज काँपऽ लागल ।

हमरा बहुत जोर सँ हँसी लागल आ हम हुनका बुझौलिअनि जे ओ सभ हमर बड़ आदर करैत अछि आ हमहूँ ककरो भाय, ककरो भातिज बुझैत छिऐक। तैँ हमरा कोनो कष्ट नहि भेल आ नाटक मे तऽ इएह सब होइत छैक, तेँ अहाँ चिन्ता जुनि करू।

एहि तरहेँ जँ मोन पाड़ऽ लागी तऽ नहि जानि कतेक प्रसंग मोन पड़ि जायत मुदा आब एकरा एतहि समाप्त करी, सैह ठीक होयत, कारण नाटकक रिहर्सल मे जयबाक अछि। अबेर भऽ रहल अछि। समय भेटला पर फेर कहियो सुना देब।

*

नचैत रहल ओ क्षण सभ

ओहि दिन रंगमंचक पछिला दिन मोन पाड़िते-पाड़िते अबेर भऽ गेल छल। हम नाटकक रिहर्सल हेतु बिदा भऽ गेल रही। कहलहुँ ने ई नाटक आब हमर जीवनक अंग भऽ गेल अछि। चाहियो कऽ आब हम एहि सँ अलग नहि भऽ सकैत छी। कोनो जरूरी नहि छैक जे हम कोनो नाटक मे अभिनय करबे करी। अनेरो ओझरायल रहैत छी। एकरा जे कही। मुदा हमर घरक लोक आब सैह बुझैत अछि जे हम अनेरो अपस्याँत रहैत छी। लाख बुझबैत छिऐक जे हम कम समय देबय चाहैत छी मुदा तैयो नाटकक विषयमे सोचबा लेल हम बाध्य भऽ जाइत छी ।

ओही दिन व्यस्तताक बीचेमे वैदेही सँ भेंट भऽ गेल। भेंट की भेल हमहीं बोरिंग रोड गेल रही तऽ गप्पक क्रममे बजा गेल जे बहुत ओझराहटि मे पड़ल छी। 'भंगिमा'क वार्षिकोत्सव छैक तैं किछु ओकरे ओरिआओनमे लागल छी। अरिपनक नाटक धूर्त्त सम्मेलन मे एक छोटछीन अभिनय करबाक भार अछि, तकर चिन्ता अछि, जे अभिनय छोट हो वा पैघ, समय तऽ लगबे करत। आ एम्हर जमाय घर मे छथि। कखनो-कखनो कऽ ठीके मोन उबिया जाइत अछि। घरक काज-धंधा, नोकरी, नाटक आ ताइ पर सँ किछु सामाजिक दायित्व। लगैए जेना एकटा शरीर आ एकटा एहि मन केँ दस दिस सँ केयो रस्सी लगा कऽ घिचि रहल हो आ हम छटपटा रहल होइ। ताहि पर वैदेही बाजि उठलीह जे नाटक आब अहाँ केँ ओझराहटि बुझि पड़ैत अछि ?

हमरा लागल जेना हमर तन्द्रा टुटि गेल हो आ हम चेहा कऽ उठि गेलहुँ। एक्के बेर मे लागल जेना शुरू सँ आइ धरिक हमर जीवनक झलकी केओ शीशा सँ देखा देने हो। आ हम सोचबाक हेतु विवश भऽ गेलहुँ जे जखन नाटके नहि तऽ हम की ?

हमर कोन अस्तित्व ? जेँ नाटक तेँ हम 'प्रेमलता' नहि तऽ नहि जानि हमरा सन कतेको प्रेमलता एहि मिथिलाक माटि–पानि मे हेरायल–भोतिआयल छथि। हुनका केओ नहि चिन्हैत छथि। किएक चिन्हतनि। कतेको एहन मैथिल ललना छथि, जे रूप, गुण, कला सभ सँ सम्पन्न छथि मुदा हुनका अवसर नहि देल गेलनि तेँ ओ आगाँ नहि आबि सकलीह आ हुनका केओ नहि चिन्हलकनि ।

हम अपन ई सौभाग्य बुझैत छी जे नेनपन ने माता–पिता, शिक्षक आ विवाहोपरान्त पतिक प्रोत्साहन भेटल जकरा बल पर हम समाजक सोझा टिकल रहलहुँ अन्यथा एहि समाज मे कुचिष्टा कयनिहारक कमी कोन अछि ।

आ हम एक साधारण व्यक्तित्व, रूप, गुण वला लोक कलाकारक झुण्ड मे शामिल भऽ गेलहुँ आ कलाकार कहाबऽ लगलहुँ ।

कहलहुँ ने, हम कखनो अपना केँ 'ओभरस्टीमेट' नहि कयलहुँ अछि। केओ जतेक हमरा चिन्हैत अछि ताहि सँ बेसी हम अपना केँ अपने चिन्हैत छी। अपना केँ चिन्हिते नहि छी अपितु ओहि पर गम्भीरता सँ सोचैत छी जे हम के छी कतऽ छी ? एकर ज्ञान हमरा सदिखन रहैत अछि। तेँ ककरो प्रशंसाक हमरा पर कोनो प्रभाव नहि पड़ैत अछि। उन्टे हमरा अपने पर हँसी लगैत अछि। हम अपना केँ तौलऽ लगैत छी जे की सत्ते हम एतेक प्रशंसाक योग्य छी ।

मुदा आब हम की कहू अपना सम्बन्ध मे, कारण ठीके हम एकटा रजिस्टर्ड कलाकार भऽ गेल छी ।

पटनाक चेतना समिति हमरा पछिला वर्ष एहि नाट्यकला केँ बढ़यबा मे योगदानक हेतु सम्मानित सेहो कयलक। नाट्य संस्था भंगिमा आ अरिपन एहि खुशी मे सपरिवार शामिल भेल आ प्रसन्नता व्यक्त कयलक। ओहि अवसर पर हमरो सँ पूछल गेल छल जे अहाँकेँ ई सम्मान केहन लागल !

मुदा हम कहलहुँ ने जे लोक जतेक हमरा चिन्हत ताहि सँ बेसी हम अपना केँ अपने चिन्हैत छी। तेँ ओहि प्रश्न पर हमरा हँसी लागि गेल छल आ बेसी किछु नहि बाजि सकल छलहुँ। मात्र एतबे जे ई नाट्य कला सम्मान योग्य कार्य छैक तेँ अपना पर भरोस भेल जे एतेक दिन जे हम अपन समय एकरा मे नि:स्वार्थ भाव सँ लगौलहुँ से लोक बुझलक। आर अधिक हम की बाजि सकैत छलहुँ कारण सभ दिन तऽ नाटक मे रटिकऽ सम्वाद बजबाक हिस्सक। अप्पन बात आइ धरि कहाँ ककरो कहलिऐ !

सभ दिन ओएह कोनो लेखकक लिखल सम्वाद स्टेज पर बजैत रहलहुँ। ओहो नीक जकाँ स्मरण नहि रहैत अछि। कारण रिहर्सलक बाद घर मे तऽ कहियो स्क्रीप्ट देखिते

नहि छिऐक। एहि मे हमर कोनो गलती नहि। हमर तेहन रूटीन बनल अछि जे रिहर्सल के बादो जँ घर मे हम नाटकेक सम्वाद रटऽ लागी तऽ घर कतऽ जायत ?

गप्पक क्रम मे भने मोन पड़ि गेल। एहि वर्ष (85-86) हमरा बेश भाषण देबाक अवसर भेटल! ओ हमरा जीवनक एकटा स्मरणीय क्षण कहल जा सकैत अछि ।

रहिका मे विद्यापति पर्व सभ वर्ष मनाओल जाइत छै। एहि वर्ष हमरो निमंत्रण पहुँचल एहि पाबनि मे शामिल होयबाक हेतु। ई ओहने सन भेल जेना अपने घर मे कखनो अपने नोंत पड़ि जाइत छैक। बहाना एकटा छल, अन्नूकेँ संग लऽ जयबाक। अन्नूकेँ ओ लोकनि गीत गयबा लेल बजौने रहथिन तैं हमरो लाख ओझराहटि रहलो पर जाइये पड़ल ।

हम जखन अपन गाम जाइत छी तऽ हमरा सब सँ नीक काज लगैत अछि जे जतबा धरि पार लागि सकय क्षणो भरिक लेल टोल मे सभक आँगन सँ घूमि आबी, सभकेँ अपन मुँह देखा दियै आ सभक मुँह हमहूँ देखि ली। जँ आर बेसी समय भेटय तऽ जँ कोनो अपने संगतुरिया भेटि जाय तऽ काँख तऽर नूआ ली आ चलि जाइ गप्प करैत पोखरि। ओतहि सँ एक डूब दऽ आबी। सभटा पछिला बात मोन पड़ि जाइत अछि। हमर नेनपन तऽ गामहि मे बीतल अछि तेँ ओ सभ हमरा बहुत नीक लगैत अछि। शहर मे एतेक दिन रहलो पर शहरुआ नहि भऽ सकलहुँ। देखिते-देखिते लोक सभमे ततेक परिवर्तन आबि गेलैक जे चिन्हब असम्भव। आ हम एखनोधरि ओएह गामक लोक रहि गेलहुँ, ओहि झुण्ड मे शामिल नहि भऽ सकलहुँ। लगैए जेना हम 25वर्ष पाछा चलि गेल छी। कतऽ सँ कतऽ भमिया गेलहुँ। लगैए जेना हम ठीके अपन गाम पहुँचि गेलहुँ ।

हँ, तऽ कहैत जे छलहुँ हम अपने पहुँचलहुँ आ अंगने-अंगने घूमऽ लगलहुँ । कारण मात्र 36 घंटा ठहरबाक छल ।

कार्यक्रम देखबाक कोनो से लालसा नहि छल कारण किछु स्थानीय नब कलाकार छोड़ि सभक गीत कतेको बेर सुनि चुकल छलहुँ। मुन्हारि साँझ भऽ गेल छलै। अन्नू केँ हम बुझा देलिऐ जे तोरा जँ कियो बजाबऽ आबौ तऽ तोँ चलि जइहें। हम कार्यक्रम शुरू भेला पर कोनो धीया-पूताक संग अथवा काकीक संग चलि आयब। हम अपना कार्यक्रम मे लागि गेलहुँ-अङने-अङने बुलबाक। एम्हर किछु कार्यकर्त्ता सभ हमरा ताका-हेरी मे लागि गेलाह। मुदा हम जल्दी कतऽ भेटबनि। एहि आँगन मे पता लगलनि जे हम ओहि आँगन मे गेलहुँ। ओ लोकनि कती काल बौआइत रहलाह। अन्त मे भेटला पर पता लागल जे ओतऽ हमर जल्दी बजाहटि अछि, कार्यक्रम शुरू होयबा सँ पूर्व। हम छगुन्ता मे पड़ि गेलहुँ जे हमर कोन काज! हमरा कोनो 'जय-जय भैरवि' गाबऽ तऽ नहि अबैए, तखन हमर कोन प्रयोजन !

फेर एक गोटा आबि सूचना देलनि जे आजुक कार्यक्रमक उद्‌घाटन अहींकेँ

करबाक अछि। हम तऽ बुझू जे एक्के बेर आकाश सँ धरती पर भट्ट दऽ खसलहुँ। सोच मे पड़ि गेलहुँ जे उद्घाटन माने तऽ होइत छैक भाषण आ तेँ किछु ने किछु तऽ बाजऽ पड़त। ताबत लाउडिस्पीकर सँ आबाज आबऽ लागल जे प्रेमलताजी आबि रहल छथि आ हुनका अयला पर कार्यक्रम शुरू भऽ जायत। फेर कियो आबि कऽ कहलनि जे हम सभ गाड़ी नेने अबैत छी, अहाँ तैयार भऽ जाउ। आब हमरा अपने पर हँसी लागल आ अपन हँसी रोकैत हुनका सभ केँ कहलिअनि जे हम अपन गाम, अपन नैहर आयल छी। हम सभास्थल गाड़ी पर चढ़ि कऽ जायब, ई केहन बात भेल। हुनका सबकेँ बुझा कऽ पठा देलिअनि जे हम जाही दुसधटोली बाटे किताब काँख तर धऽ नूआ सँ झापि स्कूल जाइत छलहुँ नीक लोक सभक नजरि सँ नुका कऽ, तहिना आइयो हम उद्घाटन करबा लेल आयब। आ सत्ते ओहिना गेलहुँ। हमरा पहुँचैत देरी उद्घोषणा भेल जे प्रेमलता आबि गेलीह अछि, आब कार्यक्रम शुरू होयबा मे विलम्ब नहि अछि। हम जखने स्टेज पर पहुँचलहुँ हमर सौंसे देह रोमांचित भऽ उठल। आँखि डबडबा गेल। कोनहुना अपना केँ रोकलहुँ। ओ खुशीक नोर छल कि दुखक से नहि कहि सकैत छी। मुदा एतबा धरि अवश्य जे ओहिठामक समाजक अपना प्रति एहन सम्मान देखि खुशी भेल छल जाहि योग्य हम अपना केँ नहि बुझैत छी। आइ हमर माता-पिता रहितथि तऽ हुनका कतेक खुशी होइतनि से सोचि कना गेल छल ।

खैर, सभ गुरुजन केँ कल जोड़ि प्रणाम करैत भाषण करब शुरू कऽ देने छलहुँ। बीच-बीच मे आँखि नोराइत रहल आ हम ओहि पर काबू करैत बजैत रहलहुँ। की सभ बजलहुँ से हमरा आइ धरि नहि मोन अछि। किछु-किछु क्षण पर होइत मात्र थपड़ीक आबाज आइयो धरि कानमे ओहिना सुना पड़ैत अछि। ई भेल हमर पहिल भाषण करबाक संस्मरण। हँ, स्टेज सँ उतरलापर अपन गुरू श्री सीतानाथ झाक दर्शन भेल 23 वर्षक बाद। तखन आर हम मने-मन लजा गेल रही जे पता नहि की सभ बाजि देने हेबै। मास्टर साहेब की सोचने हेथिन। मुदा हुनके लग जे एक हमर अपने लोक बैसल रहथि से कहलनि जे हमरा मंच पर एना भाषण करैत देखि हमर मास्टर साहेबक आँखि कतेक बेर नोरा गेलनि- जनिकर हमरा अपार स्नेह आ सहयोग भेटल अछि, जिनका हम आजीवन नहि बिसरि सकैत छी ।

हुनक आशीर्वाद लेलाक बाद जखन हम महिला पंडाल दिस आगाँ बढ़ि ओहि भीड़ मे अपना केँ मिला देबऽ चाहलहुँ तऽ मास्टर साहेबक पत्नी सँ अकस्मात भेंट भऽ गेल, जनिकर दर्शन हमरा कहियो नहि भेल छल। ओ कहलनि जे अहाँक मास्टर साहेब जहाँ अहाँक नामक उद्घोषणा सुनलनि कि आधा खयनाइ छोड़ि कऽ आबि गेलाह कहैत जे प्रेमलता आबि गेल, आब लगले कार्यक्रम शुरू होयत ।

आब हमरा ओतऽ एकोक्षण रहबाक इच्छा नहि रहि गेल छल। कनेक काल

धरि सभ सँ कुशल-समाचार पूछि उठि कऽ बिदा भऽ गेल रही। आँगन पहुँचलो पर कथी लेऽ निन्न होयत। सभटा क्षण ओहिना आँखि तऽर नचैत गेल आ हम बरेड़ी दिस तकैत रहलहुँ ।

आइ आब एतबे । जानि नहि जँ कतहु विभूति पहुँचि गेल होयताह विद्यापति भवन, तऽ कहताह जे आइयो ई लिखि कऽ नहि अनलनि। तेँ फेर दोसर खेप ।



बेर-बेर भसिया जाइत छी

आइ फेर बितल दिन मोन पाड़बाक हेतु विभूतिक दुराग्रह हमरा विवश कऽ देलक अछि आ हम कागज-कलम लऽ सोचि रहल छी । मुदा मोन आगू-पाछू कऽ रहल अछि।

कहलहुँ ने, हमरा बात नहि बिसरबाक बड़ पैघ बीमारी अछि। जहिना फिल्म मे 'चान्स' देबाक अथवा ओकरा 'ब्रेक' देब सेहो कहल जाइत छैक, बड़ पैघ महत्व छैक। आब तऽ मैथिली नाटकक पटना मे जाहि तरहक गतिविधि छैक ओहि मे हमर मैथिली मंच पटनाक कोनो भाषाक मंच सँ पाछा नहि कहल जा सकैत अछि। ओना नाटकक जतेक विधा छैक ताहि मे कियो अपना केँ पूर्ण मानि लेत तऽ ओतहि ओकर अंत भऽ जाइत छैक। तेँ कोनो कलाकार वा कोनो विशेषज्ञ जीवन मे किछु ने किछु लिखिते रहैत छथि। ओना मुँहक सुखे जे जकरा फुराय, बाजि लिअय, ओ दोसर गप्प ।

छोड़ू हमरा ओहि विवाद मे नहि पड़बाक अछि। हम अनेरे भसिया जाइत छी। हम कहैत छलहुँ 'ब्रेक' देबाक गप्प, तऽ मैथिली मंचक एखन जे स्थिति छैक ताहि मे मंच पर सेहो 'ब्रेक' देबाक केओ श्रेय लऽ सकैत छथि। तहिना हम आइ जे अपन बीतल क्षण मोन पाड़ि रहल छी तकर श्रेय विभूतिकेँ छनि । जखन-तखन एहि तरहक बलधकेल किछु लिखबाक हेतु हमरा दुराग्रह करैत रहैत छथि । हम एकटा विचित्र स्थिति मे अपना केँ पबैत छी आ एकटा आज्ञाकारी छात्र जकाँ जे जखन फुरा जाइत अछि, लिखबाक हेतु बैसि जाइत छी ।

भने मोन पड़ल, एम्हर 'भाखा' एकटा मैथिली महिला कथा अंक बहार कयलक आ विभूति हमर पाछाँ लाठी लऽ पड़ि गेलाह जे अहूँके लिखिकऽ देबाक अछि। पहिने हमरा हँसी बुझि पड़ल, मुदा पाछाँ हमरा ओहिमे गम्भीरता बुझि पड़ल। हमरा पहिने होइत छल जे बहुत गोटाकें अधलाह लगतनि। हम सोचलहुँ जे एना भऽ जेतै जे कथा हमर लिखल रहत आ नाम कोनो काल्पनिक दऽ देल जेतैक। मुदा विभूति हमर नामक घोषणा सेहो कऽ देलथिन। कथा हमर छपल। कयक गोटाकें अकततीत लगलनि, सेहो हमरा सुनबा मे आएल। जनिका जेहन लागल होनि मुदा विभूति हमरा कथाकार बनाइये कऽ छोड़लनि ।

फेर हम नाटकक दुनिया सँ फराक, नहि जानि कतऽ अनेरे ओझरा गेलहुँ। आब तऽ आओर तेहन छान पैर मे लागि गेल अछि जे ताहि सँ चाहलो पर किछु दिन धरि बहार नहि भऽ सकैत छी ।

हम सभ दिन अपना कें एक कलाकार अथवा कोनो कार्यकर्त्ताक रूप मे देखऽ चाहब। मुदा नहि जानि किएक कोन अपराधक दंड हमरा देल गेल अछि से नहि जानि। भंगिमा परिवार हमरा नहि चाहलो पर अपन संस्थाक सचिव बना देलनि। जखन कि ओहि पदक हेतु अपना कें कखनो उपयुक्त नहि बुझैत छी। कहलहुँ ने, हम कोनो संस्थाक मात्र एकटा कर्मठ कार्यकर्त्ता टा रहऽ चाहैत छी। कोनो पदाधिकारी किन्नहुँ ने। मुदा तकर ठीक विपरीत, किछु व्यक्तिक ई विशेषता होइत छनि जे पदाधिकारी भेले पर चुस्ती देखओताह। अन्यथा हुनका, कोनो संस्था किएक ने होइ, ओहि मे हुनका पचास तरहक त्रुटि देखा पड़तनि, समय रहितो हुनका समय नहि रहतनि। कहलहुँ ने, जखन देखैत-देखैत मोन अकच्छ भऽ जाइत अछि तऽ किछु अनसोहाँत बात बजा जाइत अछि ।

ओना फेर हम बाट भोतिया गेल छी। आइ तऽ एहन सन लगैत अछि जेना नाटक धरि पहुँचबे हम नहि करब। ओना आब एकर कोनो खास आवश्यकता नहि छैक। हमरो मोन आब मंच पर अभिनय करबा सँ बेसी कलाकारक ओरिआओन, नाटकक व्यवस्था आ बैसि कऽ नाटक देखब बेसी नीक लगैत अछि। पटनाक मैथिली रंगमंच मे आब महिला कलाकारक अभाव नहि अछि, जँ अभाव अछिओ तऽ ओ एकटा कृत्रिम अभाव देखाओल जाइत अछि। जेना व्यापारी सभ सभटा अन्न गोदाम मे धऽ अनेरे अभावक प्रदर्शन करैत अछि, किछु ताही तरहक गप्प। पटनाक बहुत महिला, आब रंगमंच पर आबय चाहैत अछि, मंच पर उतरबाक जे कोनो तरहक संकोच अछि से हुनका मे नहि छनि। जेना कि हम बहुत परिवार मे जाइत छी, बैसिकऽ हुनक विचार सँ अवगत होइत छी। मुदा किछु व्यक्ति अथवा रंगकर्मी, जे हमरा-अनका कहैत छथिन, से अपना परिवार सँ एहि समस्याक समाधान नहि करऽ चाहैत छथि। तैं एहन कृत्रिम अभाव देखाओल जाइत अछि। तैं जँ आब हम नाटक करब छोड़ियो दी तऽ कोनो तेहन बात नहि। पटनाक रंगमंचक हेतु हम अपन लक्ष्य प्राप्त कऽ चुकल छी ।

मुदा कलकत्ताक रंगमंचक स्थिति हमरा अवश्य छगुन्ता मे दऽ दैत अछि। कलकत्ता-रंगमंचक एक अपन इतिहास छैक। कलकत्ता अहुना एकटा महानगरी अछि। तकर बराबरी पटना कहियो नहि कऽ सकैत अछि। नाटकक सभ विधा मे आगाँ रहितो ओहिठामक मैथिल समाज हमरा बेसी रूढ़िवादी बुझि पड़लाह, अन्यथा हुनका लोकनि केँ आइ धरि दोसर भाषा-भाषी महिला कलाकार सँ काज चलयबाक हेतु बाध्य होमय नहि पड़ितनि। ओना एहि 15 नवम्बर 87 कऽ 'मिथिला विकासक परिषद्' अपन संस्थाक स्थापना दिवसक अवसर पर रंगकर्म केँ आगाँ बढ़यबामे योगदान लेल हमरा सम्मानित कयलनि। ताहि लेल हम हुनका लोकनिक आभारी छियनि मुदा हम अपना केँ सम्मान पाबियो कऽ कखनहुँ सम्मानित नहि बुझि पओलहुँ। ओ तखन सम्भव छल जखन दसटा मैथिल महिला कलाकार सँ भेंट करितहुँ आ ओ हमरा अपन बाटक रोड़ा हटौनिहारि बुझितथि। हम हुनकालोकनिक उत्साह केँ कनिओं बढ़ा पबितिअनि तऽ हमरा बेसी प्रसन्नता होइत। ओहि अवसर पर हमरा दू शब्द कहबाक सुअवसर सेहो देल गेल आ हम हुनका लोकनि सँ इएह निवेदन कयलियनि जे ओ अपना घरक बेटी-बहिन वा पत्नी केँ एहि तरहक प्रोत्साहन देथिन जाहि सँ दोसर बेर हमरा एहि तरहक सुअवसर भेटि सकय। ओना एहि मादे हम परमादरणीय बाबूसाहेब चौधरी जी सँ सेहो निवेदन कयलिअनि जे ओ एहि ठामक जाहि परिवारक महिला मंच पर अयबाक हेतु उत्सुक होथि तनिका उत्साहित करथिन आ अपन आशीर्वाद देथिन। ओ हमरा आश्वासन देलनि ।

ओना जहिया कहियो सोचै छी जे आब नाटक सँ अलग किछु काज कयल जाय तऽ मन हमर ओहि हेतु तैयार नहि होइत अछि। आ बुझू जे फेर ओही नाटकक ओरिआओन मे ओझरायल रहि जाइत छी ।

हँ भने मन पड़ल, एक बेर बिनु रिहर्सलक नाटक करबाक गप्प! किछु वर्ष पूर्व हमर गाम रहिका मे विद्यापति पर्वक अवसर पर सब वर्ष जकाँ नाटकक तैयारी छल आ नाटकक नाम छल 'ओकरा आँगनक बारहमासा'। महेन्द्र मलंगियाक लिखल। ओहि नाटक मे श्री उदयचन्द्र झा 'विनोद' जीक आग्रह छलनि जे आओर कलाकार गामक रहताह आ महिलापात्रक भूमिकाक निर्वाह हम करिअनि। मुदा बिनु एकोबेर आन कलाकार संगे रिहर्सल केने नाटक करब हमरा स्वीकार नहि भेल। तैं हुनकर बात हम नहि मानि सकलिअनि। तकर कचोट हमरा एखनो धरि अछि। मुदा की कएल जाय! सबकेँ प्रसन्नो राखब तऽ बड़ कठिन काज छैक। हमर प्रयास रहैत अछि जे हमर व्यवहारें किनको कोनो कष्ट नहि होनि ।

एकरे ध्यान मे रखैत एक बेर अरिपन द्वारा आयोजित नाटक 'बड़का साहेब' मे हमरा बिनु पोथी पढ़नहि बिनु रिहर्सल कयनहि स्टेज पर उतरऽ पड़ल। की कयल जइतैक, दू दिन नाटककेँ बाँचल छलैक, आ जे कलाकार रिहर्सल करैत छलीह हुनका

संग किछु पारिवारिक असुविधा भऽ गेलनि आ ओ तीन दिन पहिने रिहर्सल करब छोड़ि देलथिन। कार्ड वितरण सेहो भऽ चुकल छलैक आ सभ हमरा बलजोड़ी ओ भूमिका करबाक हेतु कहि रहल छलाह। हम ने स्क्रीप्ट पढ़ने छलहुँ ने कहियो रिहर्सल देखने आ ने बड़का साहेबक पत्नी बनबा योग मुँह–कान, तखन तँ अभावमे जे भेटि जाय सैह! एम्हर भंगिमाक नाटक 'गाछ' ओकर प्रदर्शन सँ एक दिन पहिने छलैक जाहिमे हम अभिनय कऽ रहल छलहुँ। हम तऽ बड़का असमंजसक स्थिति मे पड़ि गेल छलहुँ। एक दिस अपन प्रतिष्ठाक प्रश्न; दोसर दिस अरिपनक आयोजन। हम सोचलहुँ व्यक्तिसँ संस्था पैघ होइत छैक आ हम निर्णय कयल जे नाटक करब। मुदा फेर मन मे होअय जे पटनाक दर्शक एतेक अबूझ तऽ नहि अछि जे बिनु कोनो अभ्यासक नाटक कऽ ओकरा देखा देबैक आ ओ मानि लेत। मुदा हम सबटा अबधारि निर्णय लेल जे नाटक करब। नाटकक प्रदर्शनसँ किछु घंटा पूर्व नृत्य कला मन्दिर गेलहुँ आ निदेशक श्री कौशल जी सँ कहलिअनि जे हमरा कनेक स्टेज बुझा दिअऽ आ हम प्रोम्प्ट पर पूरा नाटक कऽ लेलहुँ। बुझ'बला बुझबे कयने हेतैक मुदा तैं की! ओना ओहि पात्रक हेतु हम कथमपि उपयुक्त नहि छलहुँ। फेर ओकर विडियो रेकर्ड सेहो होबऽ लगलैक। तखनो हम किरणजीकेँ मना कयलिअनि जे हम ओहि पात्रक हेतु किन्नहुँ उपयुक्त नहि छी। मुदा ओलोकनि नहि माननलनि आ रेकर्ड कइयो कऽ सफल नहि भेलाह। तखन दोहरा कऽ मंजू झाकेँ लऽ ओहि नाटकक विडियो रेकार्ड बनाओल गेल। बहुत नीक लागल हमरो। नीक बनल अछि। तैं ने कहैत छलहुँ जे आब महिला कलाकारक अभाव नहि। लोक कृत्रिम अभाव देखबैत छथि ।

एक बेर तऽ एक नाटकमे जखन हम नाटकक मंचनक दिन पहुँचलहुँ तऽ एक व्यक्ति कहलनि जे अहाँ आबि गेलिऐक, हमरा लोकनि तऽ सोचि रहल छलहुँ जे अहाँ नहि अयबैक तऽ हम दोसर कलाकारकेँ ताहि हेतु तैयार कऽ नेने छलहुँ! ओ कलाकार सेहो सएह कहलनि जे अहाँ आबि गेलहुँ। अन्नूक मधुश्रावणी छलैक आ हम एकटा संक्षिप्त ट्रेनिंगक हेतु पटनासिटी पठा देल गेल छलहुँ विद्यालय दिससँ। तैं हम नीक जकाँ समय नहि दऽ पाबि रहल छलिऐक ओहि रिहर्सल मे। मुदा नाटक मे हम भाग नहि लेब, ई तऽ सोचलो नहि जा सकैत छैक। कोनो कलाकार एहन नहि कऽ सकैत अछि। आ हम तऽ जा धरि दुनियां मे रहब, नाटकक स्टेज पर कोनो स्थिति मे पहुँचि जायब–जँ ओहिमे अभिनय करैत रहब तऽ। तैं कने कचोट अवश्य भेल छल जे हमरो सम्बन्ध मे लोक एहन सोचि सकैत अछि! ओना कलाकारक आब कोनो अभाव नहि छैक ।

कहलहुँ ने, कतबो कलाकार होथि हमरा आब किछु एहने सन रोग भऽ गेल अछि जे अभिनय करी अथवा नहि, रिहर्सल मे, नाटक मंचित हेतै तहिया, पहुँचबे धरि करब। एक–दू दिन पहिनेक गप्प थिक, एकटा कलाकार हमर परेशानी देखि कहलनि जे कोन लाभ होइत अछि एहि नाटक सभ सँ, किएक एना लागल रहैत छी, तऽ हमरा हँसी लागल छल आ कहने छलिअनि जे कोना ने भेटैत अछि! अपने सभ सँ परिचय तऽ एही

माध्यमे होइत अछि। नहि तऽ अहाँ हमरा कोना चिन्हितहुँ। हमरा मे एहन कोन गुण अछि ? धनहीन, सामर्थ्यहीन लोक छी। कहलहुँ ने हम कखनहुँ अपनाकेँ नहि बिसरैत छी जे हम की छी। ओ तीस जून 87 हम कहियो नहि बिसरब जे एकटा महिला, निकटस्थ, नाम नहि कहल जा सकैत अछि, हमरा पर चौल कयलनि जे धन्य बटुक भाइ जे बेटीक विवाह कऽ निश्चिन्त भऽ गेलहुँ। आ आब किछु बाजहु बेसी लगलहुँ अछि ।

ओना हम जा धरि जीयब, बटुक भाइक हम बहुत ऋणी छिअनि, जे हमरा सनक विपन्न, सामर्थ्यहीन लोकक बेटीक विवाह एतेक जल्दी करा हमरा ओहि चिन्ता सँ मुक्ति दिओलनि। ओना मात्र हुनके किएक, हुनक पत्नीक पूर्ण आभारी छियनि जे ओहि अवसर पर पहुँचि ओहि स्थलक शोभा बढ़ौलनि। ततबे नहि, ओ अपन भैयारी मे चारि भाइ तऽ नियमित उपस्थिति रहथि । ई बात हम कहियो नहि बिसरि सकैत छी। जखन कि हम हुनक वा हुनका परिवारक कोनो उपकार करबाक सामर्थ्य नहि रखैत छी ।

बटुक भाइक संगे-संग सम्पूर्ण भंगिमा परिवारक एक-एक सदस्यक हम ऋणी छियनि, अरिपनक परिवारक सेहो हम ऋणी छी, जनिका लोकनिक सहयोग सँ हम अपना केँ ओहि यज्ञक अवसर पर कखनो नैहरविहीन नहि बुझलौं, जेना कि हम छी । अल्पहि वयस मे पितृ-मातृविहीन भऽ गेलहुँ आ माय-बहिनक मुँह तऽ देखबो नहि कयलहुँ। तहिना ओहि अवसर पर नैहरेक परिवार सँ घर भरल छल आ कोना सभटा कार्य सम्पन्न भऽ गेल तकर हमरा भानो नहि भेल। सम्पूर्ण मैथिल समाजक हम ऋणी छी, जे लोकनि हमरा एहि अवसर पर अपन अजस्त्र स्नेह देखओलनि ।

ई सभटा हमर रंगकर्मी परिवारक देन थिक जे आइ हम कतेक बेटाक माय छी, कतेक भाय आ कतेक भातिज सँ अपना केँ भरल-पूरल पबैत छी ।

हम सभक आभार तर दबल एकटा एहन मनुख भऽ गेल छी जे ओहि तऽर दबि कऽ कखनो काल छटपटा उठैत छी, हमर मन औना उठैत अछि आ अपना केँ अपनहि जाल मे ओझरायल पबैत छी ।

पतिक आभारी छियनि जे ओ एहि तरहक अवसर देलनि जे हम रंगकर्मी समाज मे अपना केँ शामिल कऽ पओलहुँ आ आइ एक कलाकारक पाँती मे ठाढ़ छी। धिया-पुता सेहो आब हमर व्यस्तता सँ कनेक परेशान भऽ उठैत अछि। कारण ओकर समय सँ कपचि हम किछु अधिक समय नाटक तथा सामाजिक कार्य मे लगा दैत छिऐक। हाल मे अन्नूक दोसर तरहक देह छलैक आ तखनहुँ हम विद्यालय सँ सोझे डेरा नहि पहुँचि पबै छलियैक। कारण भंगिमाक वार्षिकोत्सव समाप्त भेल छल आ अरिपनक नाट्य सप्ताहक तैयारी प्रारंभ छल। एम्हर चेतना समितिक विद्यापति पर्व सेहो लगचिया गेल छलैक। तैं किछु विलम्ब भइये जाइत छल। तैँ जे कियो खोज-पुछारि मे अबैत छलथिन

तनिका ओ एतबे बात कहैत छलनि जे माँ के तऽ ततेक काज रहैत छैक जे कहियो छुट्टी नहि हेतै ।

कहलहुँ ने, आब हम स्वयं किछु नहि छी, हमर अपन किछु नहि अछि आ एतेक धरि जे हम अपना सम्बन्ध मे किछु सोचियो नहि सकैत छी। सम्पूर्ण समाज आ अपन परिवारक आभार सँ दबायल-पिचायल एकटा परम परतंत्र आ हारल-थाकल मनुक्ख बुझैत छी। हमर स्थिति तखन तऽ आओर दयनीय भऽ उठैत अछि जखन कतेक गोटा अपन आभार हमरा मोन पाड़ऽ लगैत छथि। जखन कि हम किनको आभार कखनहुँ नहि बिसरैत छिऐन। मुदा ओ तऽ मोनक वस्तु छैक। सदिखन ओकर प्रदर्शन तँ कयल नहि जा सकैत छैक। दुःख तखन आओर अधिक होइत अछि जखन अपन दायित्वक निर्वाह नीक जकाँ नहि कऽ पबैत छी। मुदा की कयल जाय! नोकरी, परिवारक दायित्व आ एतेकटा रंगकर्मक क्षेत्र !

एकटा बात धरि अवश्य जे एहि ओझराहटि सँ हटियो कऽ नहि रहल जा सकैत अछि आ हमर सनक लोकक हेतु ई उचितो नहि हैत ।

कतऽ फेर हेरा गेलहुँ! नाटक सँ हटि कऽ गप्प करबाक हमरा लगैत अछि जेना रोग भऽ गेल अछि। अनेरे की-कहाँ सोचय लगलहुँ। मुदा की कयल जाय, हरदम तऽ नाटक मे लागल रहैत छी, तखन मोनक गप्प कखन करू! ओकरो लेल तऽ कोनो एहन सन सुअवसर ताकऽ पड़त ।

मुदा आब एखन कोनो दोसर गप्प मोन नहि पाड़ब। जीबैत रहब तऽ फेर दोसर खेप। रिहर्सल मे जायब सेहो आवश्यक । 'ठहाका'क तैयारी चलि रहल अछि आ हम अपन दुःखनामा लऽ कऽ बैसल छी। विभूति कएक दिन सँ तगेदा कय रहल छथि। हमहूँ आब टालू विद्यार्थी भेल जा रहल छी। फेर ने कतहु सुनऽ पड़य जे आइयो नहि अनलहुँ ?

*

एक टा रंगकर्मीक यात्रा

सभ कलाप्रेमी एक प्लेटफार्म पर जमा भऽ गेल छल, सभक मोन मे एक रंगक उत्साह-उमंग । सभहक हृदय मे एक्के टा मनोरथ, आधुनिक मैथिली रंगमंचक निर्माण।

ईश्वरीय रंगमंच सँ फराक एक रंगमंचक कल्पना। सभ एक्के ट्रेनक यात्री छल तैं आइ प्लेटफार्म पर बेस भीड़-भाड़ छल। एहि यात्राक नेतृत्व कए रहल छलाह श्री छत्रानन्द सिंह झा (बटुक भाइ) !

सभ कलाकार रेडियो नाटकक छलाह। रेडियो नाटकक क्रम मे एहि तरहक रंगमंचक यात्राक विचार गंभीरता सँ होमए लागल छल। वर्ष छल 1973 इ० आ आयोजन छल चेतना समितिक विद्यापति पर्व ।

ओना चेतना समितिक तत्वावधान मे आनो वर्ष नाटक होइत छल, मुदा एहि तरहक विकसित रंगमंचक कल्पना नहि कयल गेल छल। नाटक होइत छल ओएह पुरान परम्परागत ढंग सँ। एहि सँ पूर्व महिला कलाकारक भूमिका कोनो पुरुष द्वारा अभिनीत होइत छल। एहन पहिल प्रयास छल जखन कोनो महिला मंच पर आबि अपन भूमिकाक निर्वाह करतीह ।

ओ दुरूह भार हमरे कमजोर कान्ह पर पड़ल तैं हमहूँ आत्मबलक पाथेयक संग ओही रंगयात्राक यात्री बनि गेल छलहुँ। चारूकात चकुआइत डेरायल, नहुँ-नहुँ डेग रखैत ओही प्लेटफार्म पर पहुँचि गेल रही जाहि ठाम हमर पुरान परिचित किछु वरिष्ठ रेडियोकर्मी

पूर्वे सँ एकत्रित छलाह। हम हुनके लोकनिक झुण्ड मे जा मिझरा गेलहुँ आ ओतहि सँ प्रारंभ भेल रंगयात्री दलक रंगयात्रा, एकटा नव प्रयोगक संग, नव उत्साहक संग। ई कोनो साधारण यात्रा नहि छल। ई छल आइ सँ 100 वर्ष पूर्व बद्रीधामक यात्रा सदृश कठिन यात्रा ।

ओहि यात्रा मे एकटा आर दस वर्षक बालिका संग भेल... नाम छलैक भारती। यात्राक प्रारंभ सफल रहल। गाड़ी सहे-सहे आगाँ बढ़ैत गेल ।

जेना-जेना गाड़ी आगाँ बढ़ल, समय बीतल, स्टेशन सभ अबैत गेल आ रंगकर्मीक संख्या सेहो बढ़ल। जेना अगिला वर्ष 1974 इ. मे एहि रंगयात्रा मे शामिल भेलीह-आजुक सुप्रसिद्ध कत्थक नृत्यांगना श्रीमती रमा दास। एहिना सभ वर्ष कलाकारक किछु जोड़-घटाव भेल। पटनाक रंगमंच एक विशाल रूप लए लेलक। चेतना समितिक विद्यापति पर्वक अवसर पर मुख्य आकर्षण भए गेल नाटक। एकरा संग बहुत कलाकार एहि मे शामिल होइत गेलाह आ संगहि नाट्य लेखक, निदेशक सेहो। पुरुष कलाकार मे मुख्य छलाह- श्री छत्रानन्द सिंह झा, श्री वेदानन्द झा, श्री फनन्त झा, श्री हृदयनाथ झा, श्री सी.पी. झा, श्री मोदनाथ झा, अशर्फी अजनबी, श्री गोलोकनाथ मिश्र, बन्धुजी, शंभुदेव झा आदि ।

ई यात्रा एखनो धरि ओहिना जारी अछि । अन्तर एतबे जे आब एहिमे यात्री दलक यात्रा 'चेतना समिति'क मंचे धरि नहि रहल। ओकर आब कैकटा ब्रांच भए गेल यथा-रंगलोक, नवांगन, अरिपन, भंगिमा, आंगन, कला समिति आदि। उद्देश्य एक मुदा एक्के डिब्बा मे चढ़ला सँ अत्यधिक भीड़ होएबाक संभावना, तैं रंगयात्री दल सुगमताक संग गन्तव्य स्थान धरि पहुँचबाक विचार कएल। नेतृत्वक जिम्मा सेहो क्रमशः रवीन्द्र नाथ ठाकुर, कौशल कुमार दास, छत्रानन्द, कुमार शैलेन्द्र, प्रशान्तकान्त, रवीन्द्र राजू, मनोज मनुज आ संगहि विभूति आनन्द, कुणाल, उमाकान्त, किशोर केशव, रोहिणी रमण, जगन्नाथ लाल दास, कौशल मिश्र, तरूण प्रभात आदि उठौलनि। यात्रा एकटा मैथिली रंग आन्दोलनक रूप लए लेलक तैं महिला रंगयात्रीक संख्या बढ़ल आ हमर आत्मबल सेहो बढ़ल आ दिन-राति एहि यात्रा कें आओर विशाल रूपमे देखबाक सपना बुनए लगलहुँ। सीमा मात्र पटना धरि नहि अपितु गाम-गाम, शहर-शहर, सम्पूर्ण देश-विदेश मे रंगयात्री पसरि जाथि आ अपन भाषा, अपन संस्कृतिक माध्यमे एक सुन्दर सुरूचिपूर्ण मिथिलाक झाँकी विश्वक मानसपटल पर अंकित भए जाय ।

सशक्त अभिनेत्री मे आब पदार्पण भेल मंजू चौधरी, सुधा दास, तनुजा शंकर, विनीता, संगीता, निवेदिता, मंजू झा, आभा झा, पूनमश्री आदिक । हिनका लोकनि मे अभूतपूर्व अभिनय क्षमता छल, संगहि ई लोकनि अभिनय कलाक प्रति पूर्ण सतर्क छलीह। एकटा आर नक्षत्रक रूप मे पदार्पण भेल श्रीमती मुदृला सिन्हाक, जे मात्र अभिनयक क्षेत्र मे नहि अपितु निदेशन-आलेखन क्षेत्र मे सेहो अपन झंडा गाड़लनि। हमरा लोकनिक समाज मे इहो एकटा चुनौती छल। हम व्यक्तिगत रूप सँ अतिशय प्रसन्न छलहुँ। आब हमरा मन

सँ डर बुझू जे बिला गेल आ उत्साहक संग मैथिली रंगमंचक एकटा सिपाही जकाँ अपन कार्य मे जुटल रहलहुँ।

'अरिपन' नाट्य प्रतियोगिताक आयोजन करए लागल। एतबहि नहि, एहि आयोजनक भार लेलनि तत्कालीन अरिपनक अध्यक्ष- हृदय सँ कलाकार तथा कवि परम आदरणीय श्री मंत्रेश्वर झा। देश नहि अपितु विदेशो मे एकटा हूलि-मालि उठि गेल। आब एहि रंगयात्रा मे बेस गहमा-गहमी आबि गेल छल, लगै छल जेना आब मैथिली रंगमंच आन सभ भाषाक मंच केँ पाछाँ छोड़ि देत। भेलो सैह, एखनो हमर रंगयात्रा आर सभ भाषा-भाषीक हेतु ईर्ष्याक विषय भए गेल अछि। समय बदलैत गेल । रंगयात्रीक दल सँ किछु रंगयात्री के अचानक चुपचाप जंजीर खीचि कए ओहि यात्रा सँ फराक हैब के हम अपन व्यक्तिगत क्षति मानैत छी। किछु रंगयात्री अपन रोजी-रोटीक समस्या सँ दोसर रूटक ट्रेन पकड़बाक हेतु बाध्य भए गेलाह तैं हुनक यात्रा स्थगित नहि मानल जा सकैत अछि। किछु यात्री स्थानीय कार्यक्षेत्र रहलो उपरान्त एहि यात्रा सँ विमुख भए गेलाह, कारण खाहे जे हो। सभ सँ दुःखद घटना भेल, एहि रंगयात्रा सँ किछु सशक्त रंगनेत्रीक विमुख हैब, जनिका सँ मैथिली रंगमंच केँ बेसी भरोस छलैक ।

ओहि मे सभ सँ प्रथम भेलीह मंजू चौधरी। नहि जानि कोन एहन कारण भेल जाहि सँ रंगमंच सँ हुनका एतेक परहेज भए गेल जे एहि यात्री दलक कोनो सदस्य सँ ओ कुशल पुछब सेहो आवश्यक नहि बुझलनि। एना होइ छै। कलाकारक मन बड़ तन्नुक होइत अछि, कनेको खोंच सहब ओकरा लेल असह्य। तहिना श्रीमती मृदुला सिन्हाक अपन रंगयात्रा स्थगित करब सेहो हमरा हेतु रंगमंचक विकास मे बाधा पड़ल। हुनका हाथ मे अपने विधा छल। ओ अभिनय नहि त नाट्यलेखन वा निदेशन मे अपन योगदान दए सकैत छलीह। सुधा दास सेहो एकाएक रंगमंच सँ फराक भए गेलीह। मैथिली नाटकक दर्शक एकटा दर्शकक रूप मे सेहो हुनक दर्शन नहि कएलक। पूनमश्री एकटा समर्थ अभिनेत्रीक रूप मे रंगयात्री दलक नेतृत्व करैत अचानक एहि रंगयात्रा सँ विमुख भए गेल छथि जखन कि हुनक पति श्री सुरेन्द्र आचार्य एहि यात्री दलक संग मुख्य भूमिकाक निर्वाह करैत रहलाह अछि। एहिना अनेक समस्या देखबैत यथा- अभिभावकक परेशानी आदिक बहाना बनबैत आभा अपन आभा सँ दर्शक केँ वंचित कए देलथिन। प्रभा झा आ नूतन झा सेहो अपन अभिनय क्षमता देखा कए यात्री दल सँ फराक भए गेलीह। तनुजा शंकर रंगमंच मे एकटा नक्षत्रक सदृश अपन डेग रखलनि। रंगमंच मे मात्र अभिनय टा हुनका सीमा नहि छल अपितु निदेशकक दायित्व सेहो ओ अपन कान्ह पर उठओलनि मुदा किछुए दिनक बाद ओ अपन मुँह दिल्ली दूरदर्शनक भिन्न-भिन्न चैनल पर प्रसारित होमय बला कएकटा कार्यक्रमक निदेशनक दिशा मे मोड़ि लेलनि आ हमरा लोकनिक हाथ खाली भए गेल ।

तनुजाक छोट बहिन कनुप्रिया शंकर सँ सेहो हमर रंगयात्री दल कें बहुत आशा छल, मुदा ओहो अपन बहुत कम समय हमरा लोकनि कें देलनि । तकरा बाद राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय सँ जुड़ि गेलीह। एहने समय मे हमर रंगयात्री दल मे शामिल भेलीह सुश्री स्नेहा, पल्लवी, सुश्री शिल्पी, सुश्री रश्मि । तीनू सुपुत्री छथि हिन्दीक चर्चित कथाकार, फिल्मकार, स्क्रीप्ट राइटर स्व. हरिहर प्रसादक। हरिहर प्रसाद तथा हुनक पत्नीक सहयोग हमरा लोकनि कखनहुँ नहि बिसरब जनिका पाबि रंगयात्री दल मे महिला कलाकारक दृष्टिएँ अगहनी बुझि पड़ैत छल। ओहने समय मे भंगिमा सात महिला कलाकार लए नाटक मंचित कएलक। आब ई कलाकार लोकनि हिन्दी रंगमंच तथा दूरदर्शन पर होमए बला कएकटा कार्यक्रम मे देखल जाइत छथि तथा पुरस्कृत सेहो भए रहल छथि। एहने सहयोगी एकटा आर परिवार हमरा हाथ लागल । ओ छथि– श्री आनन्द मोहन झा आ जनिका परिवारक सहयोगक चर्चा नहि करब तऽ अनर्गल होएत। हुनक सहयोग सँ बेशी हुनक माता श्रीमती वैदेही झाक आभारी छी जे नाटक मे सहयोग करबाक हेतु अपन चारू पोती कें सोंझा कए देलनि, जखन कि बेशीकाल एना देखैत छी जे धिया–पूता जँ नाटक दिस रूचि देखबैत अछि तऽ सबसँ पहिने बाधक होइत छैक ओकर पितामही। मुदा एतऽ उनटा भेल। पिता की आदेश दितथिन, पितामहीक आदेश भेलैक जे आइ जो मैथिली नाटक मे भाग लेत । ई एकटा मैथिलीक आन्दोलन छैक। ओ सभ पूर्ण सहयोग कयलनि। आब श्रीमती मधुलिका आनन्द, सुश्री सोमा आनन्द, सुश्री दीपा आनन्द आदि सँ एखनो रंगयात्री दल कें अपेक्षा छैक ।

ओही समय मे मंच पर अयलीह सुप्रीता दास आ सुश्री ज्योति। ई लोकनि जखन रंगयात्रा मे सम्मिलित भेलीह तखन यात्री दल मे बेश गहमागहमी छल कारण हिनका लोकनि मे अद्‌भुद क्षमता देखल गेल। जेना कि होइत आबि रहल छैक, स्त्री विवाह तखन परिवार आदि मे ओझरा जाइत अछि आ फेर स्थान परिवर्तन सेहो बाधक भए जाइत छैक। किछु छोट समयक हेतु यात्री दलक सदस्य मे हम नाम लेब सुनीता झा, अलका, नीतू आदिक, जे मात्र अपन उपस्थिति करओलनि ।

कनेक आगू बढ़लहुँ तऽ यात्री दलक समर्थ नेत्रीक रूप मे शामिल होइत छथि शारदा सिंह, नीलम सिंह, प्रीति, रश्मि मिश्र आदि। हिनका लोकनि रंगयात्रा मे बिजलीक समान गति अनलनि आ हिनका लोकनिक अभिनय क्षमता सँ कलाजगतक मर्मज्ञ सभक आँखि चोन्हिया गेल। यात्रा सुखद लागि रहल छल। विशेष रूप सँ हम शारदा सिंह आ रश्मि मिश्रक आभारी छी जे एतबा कम समय मे मैथिली रंगमंच कें अपन अभिनय क्षमता सँ पल्लवित–पुष्पित कयलनि। कनेक आगाँ बढ़ैत छी तऽ हिनके लोकनिक समय मे दूटा तारा आर रंगमंचक आकाश मे चमकल, ओ छल, अन्नू आ मन्नू, दुनू बहिन। ओ मात्र बहुत छोट अवधि मे मैथिली रंगमंचकें अपन कठिन परिश्रम सँ एकटा अलग छाप छोड़लनि जे स्मरणीय रहत। सभसँ छोट, सबहक हृदय पर अपन अमिट छाप छोड़ऽबाली एकटा नव रंगमंचक यात्री एखन छथि बरखा आ स्वाती सिंह। बरखा अपन अभिनय सँ दर्शक कें

बालिका-वधुक स्मरण दिअओलनि तथा स्वाती सिंह अल्पकालमे एकटा सशक्त अभिनेत्रीक रूप मे एहि यात्री दलक अगुआक रूप मे हमरा लोकनिक संग छथि। बरखा तऽ बाल कलाकारक हेंज सँ एहि दलक नेतृत्व कए रहल छथि जखन कि स्वातीक पदार्पण एकटा कोनो जिद्दी नेना जेना कोनो अजूबा खेलौनाक जिद्द ठानि दैत अछि तहिना ओ अपन परिवार मे एकटा नाटक देखलाक बाद नाटक दल मे शामिल होएबाक जिद्द ठानि देलनि। माता-पिता हुनक आगू नत भए गेलथिन। एना ई हीरा एहि यात्री दल कें हाथ लागल ।

हमर यात्रा अनवरत जारी अछि आ हमर यात्री दलक कलाकार आनो भाषा, आनो क्षेत्र मे अपन कलाक माध्यमे मैथिली रंगमंचक प्रतिष्ठा बढ़ा रहल छथि ।

एहि मे सभ सँ प्रणम्य हम हुनका लोकनि कें मानैत छी जे एहि रंगयात्रा दलक यात्री दल मे अपन परिवार, अपन पत्नीकें उत्साह तथा गर्वक संग शामिल कयलनि, जाहि मे सभसँ पहिने हम नाम लेब स्व. ललन प्रसाद ठाकुर, जमशेदपुर, श्री अशोक कुमार झा, मिथिला विकास परिषद, कोलकाता, श्री रोहिणी रमण झा, आंगन, पटना, श्री प्रदीप बिहारी, बेगूसराय, चर्तुभुज आशावादी, विराटनगर, नेपाल, श्यामसुन्दर सिंह (नबार्ड) भंगिमा, पटना आदि। ई लोकनि मैथिलीए नहि अपितु आनो भाषाक रंगयात्री हेतु अनुकरणीय छथि। बेशी इएह देखल गेल अछि जे रंगकर्मी महिला कलाकारक भूमिका हेतु दोसर परिवार दिस तकैत छथि। अपन परिवारक स्त्री कें एहि दल सँ फराके राखब उचित बुझैत छथि ।

जाहि महिला कलाकार लोकनिक नाम ऊपर गनाओल अछि मात्र ओतबे महिला एहि यात्रा मे शामिल नहि भेलीह, अपितु कएकटा एहन नाम अछि जे जँ अपन किछु समय दितथि तऽ रंगमंचक आइ दोसर रूप रहैत। मुदा होइत ई अछि जे दुराग्रह वा पारिवारिक परिचय सँ किछु अभिभावक अपन बेटी या बहिन कें एक बेर मंच पर आबए देलनि फेर ओ दोसर नाटकक मुँह नहि देखि सकली। एहन रंगयात्री सँ कोनो एक आयोजन मे काज चलाओल जा सकैत अछि, मुदा हुनका सँ रंगमंचक विकास संभव नहि। जँ कोनो कलाकारक इच्छा रहितो छनि, अभिभावक समयाभावक देबाल ठाढ़ कए दैत छथि। ओना सत्त पूछी तऽ नाटक मे समय बहुत लगैत छैक आ कोनो आर्थिक लाभ नहि ।

मुदा, तैयो हम निराश नहि छी। पूर्ण आशा अछि जे हमर रंगमंच एहिना दिनानुदिन विकसित होइत रहत आ एहि यात्रा दलमे नित नूतन यात्री शामिल होइत रहत। चिन्ताक बात एतबे जे एखनुक सामाजिक तथा सांस्कृतिक वातावरण एहि रंगयात्री दलकें हतोत्साह करबा मे लागल अछि ।

हमर उद्देश्य जँ स्पष्ट अछि तऽ हमर यात्रा अपन लक्ष्य धरि अवश्य पहुँचत। हमर ट्रेन द्रुतगति सँ छोट-मोट हाल्ट आदि छोड़ैत मुख्य-मुख्य जंक्शन पर अँटकैत अपन उद्देश्य मे सफल होइत आगाँ बढ़ि रहल अछि । मात्र यात्री कें धैर्य सँ समयक प्रतीक्षा करबाक छैक। आइ एतबे । जँ समय भेटल तँ फेर दोसर खेप ।

**



प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'

जन्म : रहिका, मधुबनी (बिहार)

तिथि : 29 सितम्बर 1948

शिक्षा : एम.ए. (मैथिली), एम.एड्

व्यवसाय : + 2 व्याख्याता, बाँकीपुर राजकीय बालिका द्वादशीय विद्यालय, गोलघर, पटना-800001

अभिरुचि : अभिनय। एखन धरि लगभग दू सए नाटक तथा अनेक मैथिली, हिन्दी, भोजपुरी फीचर फिल्म, टेलीफिल्म आ धारावाहिक मे अभिनय। एकर अतिरिक्त आकाशवाणी, पटनासँ कथा-वार्त्ताक वाचनक संगहि रेडियो नाटकमे सहभागिता तथा उद्घोषणा-कम्पीयरिंग।

पद : चेतना समिति, भंगिमा, अरिपन, मैथिली महिला संघ, बिहार संगीत नाटक अकादमी, वंदना रानी केन्द्र आदि संस्थाक अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्ष रूपमे समय-समय पर कार्यरत।

सम्मान : चेतना समिति, पटना / अरिपन, पटना/ मिथिला विकास परिषद्, कलकत्ता / अखिल भारतीय मिथिला संघ, नई दिल्ली / बिहार आर्ट थियेटर, पटना / प्रांगण, पटना / विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा / मिथिला सांस्कृतिक संगम, प्रयाग/ भारतीय राष्ट्रीय छात्र संगठन, पटना, बिहार / पटना रोटरी क्लब आदि द्वारा अभिनंदित ओ सम्मानित।

सम्पर्क : एल 2/33, पी.आइ.टी. कालोनी, कंकड़बाग, पटना- 800020,

दूरभाष : 0612-2351976

ओ दिन ओ पल

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'